न्यायसम्बोधन-1

(न्यायधर्मसभा के उद्घाटन समारोह के शुभ अवसर पर श्री गुरुजी द्वारा दिए गए सम्बोधन के संपादित अंश)

न्यायधर्म अपनाओ!
समस्त राष्ट्रीय समस्याओं से छुटकारा पाओ!!

लेखक

श्री अरविन्द 'अंकुर'

न्यायधर्मसभा

जगजीतपुर, कनखल, हरिद्वार (उत्तरांचल)

फोन : 01334 - 244760, मोबाइल : 09319360554

वेबसाइट : www.nyayadharmsabha.org

ईमेल : info@nyayadharmsabha.org

© : All Rights Reserved to Dharm Sansthapak Sangh, Haridwar

न्यायप्रार्थना

हे प्रभो! सत्बुद्धि दो समता सदा मन में पले।
न्याय सामन्जस्य का दीपक सदा जग में जले।।

अर्थ में संस्कार में व्यवहार में भी न्याय हो।
आत्महित सबका सधे अध्यात्म का समुपाय हो।।

न्याय ही आधार हो विधि के उचित निर्माण का।
राष्ट्रधर्म यही सदा है न्यायपथ कल्याण का।।

व्यक्ति को शिक्षा मिले परिवार को आजीविका।
ग्राम को सुविधा सुखद हो सृष्टि को संरक्षिका।।

इस धरा पर हे प्रभो! शुभ न्याय का विस्तार हो।
तज विषमता भेद मानव में परस्पर प्यार हो।।

न्यायधर्मसभा के उद्घाटन समारोह के शुभ अवसर पर श्री गुरुजी द्वारा दिए गए सम्बोधन के संपादित अंश

प्रिय मित्रों,

आज नववर्ष की शुभकामनाओं के साथ आप सभी के लिए हमारे पास एक शुभसूचना है, एक खुशखबरी है। नववर्ष का आनन्द शायद उससे दुगुना हो सके।

हम लोग बहुत दिनों से समाज की आपाधापी में जी रहे हैं। पिछले हजारों वर्षों से धर्म के नाम पर हम अनेक प्रकार की बातें सुनते चले आ रहे हैं। लेकिन धर्म के वास्तविक स्वरूप का कहीं कोई उल्लेख नहीं मिलता। बातें होती रहीं, धर्म को जीवन से अलग करके देखा जाता रहा। हम लोग सोचते रहे कि धर्म और जीवन परस्पर विरोधी हैं। आदमी धर्म से डरने लगा। जीवनव्यवस्था दो भागों में बँट गयी– धर्म और राजनीति। हमारी सामाजिक जीवनधारा राजनीति की गिरफ्त में चली गई और धर्म तिरस्कृत हो गया।

हम सोचते रहे राष्ट्रीय व्यवस्था कुछ और है तथा धर्म कुछ और। इन दोनों बातों में बहुत दिनों तक रस्साकसी चलती रही। धर्म हिन्दू, मुस्लिम, सिख, ईसाई, जैन, बौद्ध, पारसी, बहाई आदि अनेक भागों में बँट गया और राजनीति एक रही। लोगों को अपने जीवन का कल्याण राजनीतिज्ञों से प्राप्त होता दिखाई दिया कि हमें इनसे जीवन प्राप्त हो रहा है क्योंकि धर्म जीवनविरोधी हो चुका था।

जब धर्म मन्दिर की घंटियों में कैद हो गया, मस्जिद की अजानों में कैद हो गया, हर की पौड़ी में, अयोध्या के राममन्दिर में, मथुरा के कृष्णमन्दिर में, मक्का की मजार में, चर्च की दीवार में कैद हो गया, तो कुत्सित राजनीति को जीवन पर कब्जा करने का अवसर मिला। आम आदमी को जीवन में रस था, किन्तु धर्म जीवन से परे की बात करने लगा। धर्म ने कहा– जीवन का त्याग करो! किन्तु आदमी तो जीवन का आकांक्षी था, अतः धर्म से कटने लगा। आदमी जब धर्म से कटा तो राजनीति ने दावे किए कि हम तुम्हें छत्रछाया देंगे। शिकारियों ने हाथियों से कहा, "आओ हम तुम्हें गन्ना देंगे!"

राजनीति क्या थी? किसी पर राज करने की चेष्टा! राज हमेशा किसी पर किया जाता है, किसी को अपना दास बनाया जाता है, अपने अधीन किया जाता है। जबकि न्यायनीति किन्हीं भी दो पक्षों के बीच समुचित हितनिर्णय है।

धर्म क्या है? जीवन में पारस्परिक सहजीविता के आधार पर न्यायपूर्वक जीना। धर्म जीवन को दो भागों में नहीं बाँटता था। राजनीति ने जीवन को दो भागों में बाँट दिया– शोषक और शोषित। धर्म पूजा–पाठ की वस्तु बनकर रह गया; जबकि जीवन जीने की कला को, जीवनव्यवस्था को धर्म कहते हैं। कुत्सित राजनीति ने धर्म को न्याय को नष्ट कर डाला।

जीवनव्यवस्था से जब धर्म कटा तो जीवनव्यवस्था खाली हो गयी। राजनीतिज्ञों ने जीवनव्यवस्था के खालीपन को भर दिया। जीवनव्यवस्था के सभी खाली पदों पर राजनीति का कब्जा हो गया। धर्म ने उस स्थान को छोड़ दिया। हम लोग ये सोचने लगे कि साधुता धर्म है; हम लोग ये सोचने लगे कि त्याग धर्म है। जब साधुता धर्म बन गई, पूजा–पाठ धर्म बन गया। परमात्मा को पाने की कला के नाम से धर्म विख्यात हो गया, चारों तरफ साधु–महात्माओं का बोल–बाला हो गया, सन्तों ने जीवन को माया बताया और उससे भागने की विधि को धर्म बताया। जीवन से कैसे भागें? पदों को छोड़ दें। बड़ी खुशी मनायी जाती है देश में, जब कोई प्रधानमन्त्री के पद को लात मार देता है

और उसकी बड़ी तारीफ होती है क्योंकि त्याग को धर्म कहा गया, राग को राजनीति कहा गया। तो जो कुरागी लोग थे, जो काम नहीं करना चाहते थे, वे सब राजनीति में उतर गए। उन्होंने कहा ये पद तो खाली हैं और इन पदों पर बहुत पैसा है, सारा सार्वजनिक धन, सारी सार्वजनिक सम्पदा वहाँ निहित है। कुत्सित राजनीति को खाली पदों का लाभ मिला। जब त्यागी महापुरुषों, महात्मागाँधियों का जन्म हुआ। उन्होंने कहा– "हम प्रधानमन्त्री बनकर क्या करेंगे?" तो उनके द्वारा खाली किए गए पदों पर कुछ लोग तो बैठेंगे ही। श्रेष्ठ लोग पदत्यागी बनने लगे, बुरे लोग पदरागी बनने लगे तो उसका परिणाम यह हुआ जो हम आज देख रहे हैं।

अभी आपके ग्यारह सांसद खदेड़कर संसद से बाहर कर दिए गए पत्रकारों की कृपा से। पत्रकारों द्वारा चलाए गए स्टिंग आपरेशन में सांसद घूस लेते हुए पकड़े गए। यदि पत्रकार न होते, तो शायद ये चलता ही रहता। आज की मीडिया बड़ी सशक्त है जिसकी मर्जी उसकी सरकार को रातोंरात गिरा दे और जिसे चाहे संरक्षण देती रहे! इसलिए हमने आज मीडिया को बुलाया है। हम मीडिया से कुछ कहना चाहते हैं। हम सात साल से कहीं नहीं आते-जाते। एक ही जगह पर बैठे हुए हैं। बैठे हुए ही नहीं थे बल्कि यहाँ बैठकर हमने कुछ कार्य किया है। हमने सम्पूर्ण राष्ट्रीय व्यवस्था को बदलने का इंतजाम किया है। विश्वभूतल पर भारत ही नहीं विश्व की समस्त सरकारों के नाम हम आज सन्देश देंगे। हम पंचवर्षीय कार्यक्रम की घोषणा कर रहे हैं और एक घोषणापत्र 'न्यायधर्मसभा' नामक संस्था की ओर से जारी कर रहे हैं। पाँच साल के कार्यक्रम की घोषणा की जा रही है। सामाजिक न्याय को प्रतिष्ठित करने के लिए घोषणापत्र में वे बातें दी जा रही हैं। सामाजिक न्याय की दृष्टि से न्यायशील अधिकारों को प्रतिष्ठित करने के लिए हम पाँच वर्ष का समय दे रहे हैं। इन पाँच सालों में ही आपको अपनी सारी गतिविधियों को ठीक करना होगा। अगर इन पाँच सालों में सामाजिक न्याय नहीं हुआ अथवा इसे स्वीकार नहीं किया गया, तो सन 2011 से इसे हम आध्यात्मिक बल से प्राकृतिक न्याय के आधार पर करेंगे।

पाँच सालों का समय इसलिए दिया जा रहा है कि इन पाँच सालों में लोगों को यह पता हो कि हमें बताया गया। कोई यह न कहे कि यह हमारे ऊपर जबरन थोपा जा रहा है। इन सब बातों से भारत ही नहीं विश्व की 90% से अधिक जनसंख्या सहमत सिद्ध होगी। इसे सुप्रीम कोर्ट के द्वारा सन्वैधानिक समिति का गठन कराके और प्रत्यक्ष जनमत संग्रह के दौरान पता किया जा सकता है। ये चार मूलभूत मानवाधिकार हैं– गुण, धन, सुख, स्वतन्त्रता की प्राप्ति। अथवा इसी आधार पर राष्ट्र में निम्नलिखित चार जनाधिकार मनुष्यों के लिए न्यायशीलता के आधार पर घोषित होते हैं :–

१. पहला जनाधिकार है- शिक्षाप्राप्ति का।
२. दूसरा जनाधिकार है- आजीविका या रोजगार प्राप्ति का।
३. तीसरा जनाधिकार है- सुखसुविधा प्राप्ति का। (सड़क, बिजली, पानी आदि)
४. चौथा जनाधिकार है- संरक्षण प्राप्ति का। (चिकित्सा, सुरक्षा, न्यायालय आदि)

कुछ लोग कहेंगे कि मानवाधिकारों में तो ये बातें नहीं आती। मानवाधिकार आयोग ने अपने अधिकार बना रखे हैं। आदमी की, मनुष्यों की जरूरतों को अध्ययन किए बिना मानवाधिकार बनाकर घोषित करने से वे मानवाधिकार नहीं हो जाएँगे।

मानव की मौलिक आवश्यकताओं को ही मानवाधिकार कहा जा सकता है। इसके अतिरिक्त किसी बात को नहीं। मौलिक आवश्यकता, फण्डामेन्टल राइट क्या हो सकता है, इसे हम देखें, तो पता चलता है कि बिना 'एजूकेशन' के कोई भी मनुष्य मनुष्यता को

प्राप्त नहीं हो सकता। यदि एक बच्चे को उठाकर समाज से बाहर किसी क्षेत्र में जहाँ शिक्षा की व्यवस्था न हो, एक जंगल में डाल दिया जाए, तो निश्चय ही वह बच्चा जंगली जानवर से अधिक नहीं होगा, 10 साल बाद या 20 साल बाद भी। कई पकड़े गए। रामू नाम का एक मानवभेड़िया शिकारी दल ने पकड़ा। बचपन में वह बिछुड़ गया था। भेड़ियों ने उसे मारा नहीं, पाल लिया। शिकारियों के एक दल ने जाल में उसे पकड़ लिया, उसे पकड़कर ले आए। देखा तो वह आदमी था। बहुत उसे सिखाने-पढ़ाने की चेष्टा की गई। परिणाम यह हुआ कि वह सीख तो न पाया, जोर-जबरदस्ती में मर गया, क्योंकि सीखने की भी एक निश्चित आयु होती है। बाल्यकाल ही शिक्षा के लिए अधिक उपयोगी है।

शिक्षा ही तो आपको मनुष्य बनाती है। इसलिए मानवाधिकार, फण्डामेन्टल राइट अनादिकाल से 25 वर्ष तक ब्रह्मचर्य आश्रम के रूप में घोषित कर रखा है। हमारी पॉलिटिक्स ने, राजतन्त्र ने कभी जनता को शिक्षित होने ही नहीं दिया। आज की राजनीति भी पुराना राजतन्त्र ही है। आपको लगता होगा लोकतन्त्र है, लेकिन पहले भी छल-बलपूर्वक गद्दी प्राप्त की जाती थी और आज भी छल-बलपूर्वक गद्दी प्राप्त की जाती है। यह बात सभी लोग भली-भाँति जानते हैं। आज कोई भी समझदार आदमी चुनाव में वोट डालने के लिए तैयार नहीं है। केवल 10% से 15% आदमी अथवा उनके चंगू-मंगू ही वोट देने जाते हैं, जिन्हें राजनीति से कुछ अनुचित लाभ उठाना होता है अन्यथा इस लोकतन्त्र का पूरी तरह जनाजा निकल चुका है। समझदार आदमी भाग रहा है वोट लेकर कि किसे वोट दे- हाथी को या हाथ को? कमल को या साइकिल को? सभी चिन्हों पर वही आदमी है, जिसे राजनेता कहते हैं। ये समस्या बहुत गहरी हो चुकी है।

वास्तविक बात यह है कि फण्डामेन्टल राइट्स मानवों को क्यों प्राप्त नहीं हुए। मानवाधिकार आयोग क्यों सोता रहा? मनुष्य की मनुष्यता के साथ इतना अन्याय कि उसे उसके अधिकार ही न दिए जाएँ।

(स्वामी विवेकानन्द ने अपनी पुस्तक 'हे भारत! उठो, जागो!' में कहा है- ''स्वाधीनता पाने का अधिकार उसे नहीं, जो स्वयं औरों को स्वाधीनता देने को तैयार न हो। मान लो, अंग्रेजों ने राज्य तुम्हारे हाथों में सौंप दिया तो होगा क्या? तब तो तुम प्रजा को दबाओगे और उन्हें कुछ भी अधिकार न दोगे। गुलाम तो शक्ति चाहता है- दूसरों को गुलाम बनाने के लिये। 'सबका समान अधिकार है', सभी समान हैं'- ये जो तत्त्व पूर्वकाल में आचार्य शंकर, रामानुज और चैतन्य आदि द्वारा प्रचारित हुए थे, उन्हीं के आधार पर समाज को पुनः गठित करने का प्रयत्न करो।'')

धर्म यही कहता है कि कोई किसी पर राजा नहीं होगा। न्यायपूर्वक सभी को जीना होगा। महाभारत के एक वचन के अनुसार-'न वै राज्यं न राजाऽऽसीन्न च दण्डो न दाण्डिकः। धर्मेणैव प्रजा सर्वे रक्षन्तिस्म परस्परम्॥' सीधा कहा गया था कि पहले न कोई राजा था न कोई राज्य था, न कोई दण्डविधान था, न कोई दण्ड देने वाला था। क्योंकि 'धर्मेणैव प्रजा सर्वे रक्षन्तिस्म परस्परम्' धर्म के द्वारा ही, न्याय के द्वारा ही सभी के पारस्परिक हित सुरक्षित थे। राजनीति की क्या जरूरत थी? कोई किसी पर राज करे, बड़े शर्म की बात है। बात समझ में नहीं आती है। हर आदमी सरकार बना हुआ है। एक जरा सा संगठन बनाया और सरकार बन बैठे। सरकार का काम आप क्यों हाथ में लेते हैं? शिक्षा देना सरकारी काम है। शिक्षा सरकार देगी आप बीच में सरस्वती शिशु मन्दिर क्यों बना रहे हैं? मदरसा क्यों खोल रहे हैं? यदि आप बड़े न्यायकारी हैं तो शिक्षा के लिए सरकार पर जोर डालें। सरकारी प्राइमरी स्कूलों में शिक्षक नियुक्त किया जाता है चोर-उचक्का, जो न कभी पढ़ाने जाता है और न कभी इन स्कूलों में पढ़ाई होती है। स्कूल पाठशाला से भोजशाला बन गया है। अभी-अभी अखबार में आया है कि माताओं को भी खाना स्कूल में ही मिलेगा। (शिक्षा के लिए बजट नहीं है, पुस्तकें नहीं

हैं, शिक्षणसामग्री नहीं है, शिक्षक नहीं हैं, विद्यालय नहीं हैं; किन्तु भोजन उपलब्ध है, भीख उपलब्ध है। वास्तव में माता-पिता को रोटी नहीं बल्कि रोजगार चाहिए, भीख नहीं रोजगार का अधिकार चाहिए।)

हम लोग पढ़े-लिखे, समझदार होते हुए भी किस कदर बैलों की भाँति जोते जा रहे हैं- केवल चन्द मूर्खों के द्वारा। क्या हम लोगों ने कभी इस बात पर विचार किया। बड़े-बड़े आई.ए.एस. अधिकारी अनपढ़ मुख्यमन्त्री के अधीन काम करने को बाध्य हैं। यह कितनी विचित्र बात है कि एक आदमी जो अशिक्षित है वही आपकी शिक्षानीति चला रहा है, सारी जिन्दगी की भाग्यरेखा निश्चित कर रहा है। और वह कुछ नहीं जानता है, वह किसी काम का नहीं है। (यह बात ठीक है कि सभी लोगों को हवाई जहाज चलाने का अधिकार है किन्तु पायलट की योग्यता अर्जित करने के बाद।)

जिसे कुछ नहीं पता कि इकोनॉमिक्स क्या है, वही अर्थमन्त्री बन जाता है। अर्थशास्त्र देखा नहीं कभी और न ही घर में पढ़ने की फैसिलिटी है, न अर्थशास्त्र की पुस्तक देखी है और वह अर्थशास्त्री है, वित्तमन्त्री है, उसने सारा वित्त अपने घर की ओर लगा दिया। आप पत्रकार बन्धु देखें कि यह क्या हो रहा है? क्या आप लोगों को शर्म नहीं आती कि एक बेवकूफ आदमी आपको चलाए? आप लोग सहन कैसे करते हैं इस बात को? एक मुख्यमन्त्री जो बिल्कुल उजड्ड है, दिनभर गाली बकता है, शराब पीता है, मांसाहारी भी है और दूसरों पर हमला भी करवाता है। बुद्धिजीवी वर्ग सिर्फ इसलिए चुप है कि कहीं मारे न जाएँ। हम कहते हैं कि ऐसा डर किस काम का? अगर मर-मर के घुट-घुट के आप लम्बी जिन्दगी भी जी लिए तो उससे क्या होगा? इसी डर के कारण भारत कई हजार साल तक गुलाम रहा। सुई तक यहाँ बननी बन्द हो गई थी, क्योंकि शिक्षा पूरी तरह से नष्ट हो गयी थी। थोड़े से लोग यहाँ-वहाँ से पढ़कर आए। नेहरू, गाँधी, अरविन्दो, सुभाष आदि और इन्होंने अपने पढ़े-लिखे होने का सबूत दिया और अँग्रेजों को खदेड़ दिया। उन्हें खदेड़ना नहीं था। हम होते तो उन्हें खदेड़ते नहीं, बल्कि यह कहते कि तुम रहो, हम भी रहें, न्यायपूर्वक। जनता के साथ आजादी के नाम पर धोखा हुआ असली बात तो न्याय स्थापना थी। व्यवस्था बदलनी थी आदमी नहीं। जबकि अँग्रेजों को हटाकर खुद अन्यायी लोग शासक बन बैठे। आवश्यकता थी कि योग्यता के अनुसार पदों पर नियुक्ति हो, इसमें क्या बुरा था? लेकिन नहीं, गरीबों को सिखाया जाता है कि बाबा अम्बेडकर का संविधान है, इसलिए इसकी पूजा करना और अपने अधिकारों की बात न उठाना। इस संविधान में अपने अधिकारों की माँग न करना। संविधान में लिखा है आपको समानता का अधिकार है, आपका संविधान भी कहता है लेकिन जनता को अशिक्षित रखकर उसके साथ धोखा क्यों किया गया? 90% आदमी आजादी के समय अशिक्षित था, 90% व्यक्ति कृषि पर जीवन व्यतीत कर रहा था क्योंकि जब तक पढ़ा-लिखा नहीं होगा, तब तक व्यापार न कर सकेगा। वाणिज्य यहाँ समाप्त हो चुका था। 'कृषिप्रधान देश और गौप्रधान कृषि' का नारा लगाने वाला यह राष्ट्र पतन के गर्त में चला गया। कई हजार साल की गुलामी ने इसे जंगली जानवर बना दिया। शिक्षा समाप्त हो गयी थी। शिक्षा मौलिक अधिकार है जब तक आपको फण्डामेन्टल राइट्स नहीं मिलेंगे, तब तक आप जानवर ही हैं। एक व्यक्ति है उसके पास 12 लाख रुपये न हों, तो वह मेडिकल में प्रवेश नहीं ले सकता, चाहे वह कितना भी योग्य हो? कहाँ गया संविधान में कथित समता का अधिकार? मतलब शिक्षा 12 लाख वाले को ही मिलेगी, यह बात सुनिश्चित हो गयी। धोखा कर रहे हैं पब्लिक के साथ। संविधान को निचोड़कर पी जाना चाहते हैं कुछ लोग। ये क्या है? संविधान इज्जत की चीज है, पूजा की चीज है, चूसने की चीज नहीं। उसकी आड़ में धोखा करने की जरुरत नहीं किसी को। पहला फण्डामेन्टल राइट है- एजूकेशन, जो कि राष्ट्रीय कोष के द्वारा फुलफिल (आपूर्त) किया जाना चाहिए।

दूसरा फण्डामेन्टल राइट है- रोजगार। एक परिवार जिसमें कि आलरेडी चार व्यक्तियों को सर्विस मिली हुई है, उसे एक और सर्विस दी जाती है किन्तु दूसरे परिवार में उससे ज्यादा योग्य व्यक्ति बैठा है, उसे नहीं मिलेगी। ये कहाँ की गणित है? एक व्यक्ति जिसके होटल चल रहे हैं, एक व्यक्ति जो फैक्ट्रियों का मालिक है, एक व्यक्ति जो एक लाख करोड़ की सम्पत्ति का मालिक है, राज्यसभा में बैठकर 50000 रुपये वेतन-भत्ते उठा रहा है। कहाँ है दिमाग तुम्हारा? ये हम क्या कर रहे हैं? ऐसे व्यक्ति को मनोनीत भी कर दिया जाता है। जनता चुने न चुने वे प्रधानमन्त्री बन जाएँगे। वे इस देश के किसी भी पद पर चले जाएँगे और उस पद पर पहुँचकर सारे संसाधनों पर कब्जा करके और चुनाव प्रचार कराके वोट बटोर लेंगे। वोट किसकों दें? जिन लोगों के पास पॉवर है, वे अपने वोट का इंतजाम कर लेंगे- कम्बल बाँटकर। पंजाबकेसरी के लेख में हमने पढ़ा एक सांसद 5 या 7 करोड़ रुपये खर्च करता है- चुनाव जीतने के लिए। एक रुपया वह व्यक्ति किसी गरीब को ईमानदारी से देने को तैयार नहीं होगा यदि देगा भी तो बाहर वोट के चक्कर में। कोई व्यक्ति 5 या 7 करोड़ रुपये चुनाव पर क्यों खर्च कर रहा है? जाहिर है वहाँ 50 करोड़ खींचने का इंतजाम है। ये सारे राजनेता इन्हीं धन्धों में लिप्त हैं। पंजाबकेसरी वाले अश्विनीकुमार रोज इस पर हाईलाइट कर रहे हैं। उसके बाद भी यह जनता चुप है। कई न्यूजपेपर वाले तो एकदम चुपचाप बैठे हुए हैं कि भैया जो चल रहा है, उसे चलने दो। आखिर उन्हें भी अखबार चलाना है। कभी-कभी दैनिक जागरण वाले भी कुछ लिखने की हिम्मत जुटाते हैं, ज्यादा कुछ लिखा तो शायद उनका अखबार भी चलना बन्द हो जाए। कई पत्रिकाओं का हश्र हम देख चुके हैं। अगर वे कोई सच्चाई लिख भी दें, तो शायद उनका छपना भी मुश्किल हो जाए।

इसलिए हम जानते थे कि यह काम आदमी के हाथों का नहीं। आदमी के हाथों पर एक स्क्रिप डाल दी गई है। सच्ची पत्रिकाएँ बन्द करा दी जाती हैं, क्योंकि वे सच्ची बातें प्रकाशित करती हैं। ''हम पे इल्जाम है कि चोर को क्यों चोर कहा। क्यों सही बात कही काहे न कुछ और कहा।।'' इसी कहावत को लोग दोहरा रहे हैं। जरूरत है कि लोग इस कहावत से बाहर निकलें और सही बात कहना सीखें। यद्यपि यह क्षणिकरूप से घाटे का सौदा हो सकता है। तो भी यदि सही बात नहीं कहोगे, तो बहुत दिनों तक दुरावस्था में जियोगे! 2500 साल की गुलामी का प्रमाण आपके सामने है। शकों ने मारा, हूणों ने मारा, तातारियों ने मारा, मुगलों ने मारा, तुर्कों ने मारा, पुर्तगालियों ने मारा, जर्मन सेना यहाँ पड़ी रही, ईरानियों ने, यवनों ने, सभी ने भारत को गुलाम बनाया। शायद ही कोई अन्य राष्ट्र इस सौभाग्य से वंचित रहा हो। सभी देशों, सभी जातियों ने इसे गुलाम बनाया। बात सिर्फ इतनी सी थी कि हमारे राज के भूखे भेड़ियों ने अपनी प्रजा को चूस डाला, जातिवाद की चक्की में पीस डाला। हीनता की ग्रन्थि, इन्फीरियॉरिटी काम्पलेक्स से ग्रसित कर दिया। जो बेचारे दीन-हीन, दलित-दमित कर दिए गए, वही बेचारे आज दलितसेना बनाते फिर रहे हैं, यहाँ-वहाँ! इसकी क्या जरूरत थी? जो देश यही कहता रहा कि कण-कण में भगवान है, उसने अपने ही लोगों का खून पिया। कण-कण में भगवान की घोषणा करने वालों ने लोगों को दलित-दमित और पता नहीं क्या-क्या बना दिया। जाति की आड़ लेकर अच्छे व्यक्ति को बुरा बताया गया, नीच कहा गया, म्लेच्छ कहा गया। हम लोग इस उपद्रव से अगर बाहर निकल सकें, तो कितनी अच्छी बात होगी? सामाजिक न्याय के मुद्दे में ये सारी बातें आ जाती हैं- 1. आर्थिक न्याय, 2. सांस्कारिक न्याय, 3. व्यावहारिक न्याय, 4. आध्यात्मिक न्याय।

समाज में न्याय प्रतिष्ठित करो!

आर्थिक न्याय का तात्पर्य है कि समाज में सभी को अन्न, वस्त्र, आवास और अन्य वस्तुएँ समुचित रूप से प्राप्त हों। सांस्कारिक न्याय का तात्पर्य है कि समाज में सभी को नाम, रूप, गुण और ज्ञान आदि सभी कुछ समुचित रूप से प्राप्त हों। सारी शिक्षा-संस्कारिता सभी लोगों को पाने का हक है। इसी न्यायनीति के आधार पर जो व्यवस्था चलती है, उसे धर्म कहते हैं। धर्म न कोई हिन्दू होता है, न कोई मुस्लिम, न सिख होता है, न कोई ईसाई होता है। इसकों भलीभाँति समझने की जरूरत है और अगर आप इस न्यायधर्म को समाज से हटा देंगे, तो धर्मरूपी न्यायनीति के हटते ही राजनीति खाली जगह को भरने के लिए चौबीसों घण्टे तैयार मिलेगी। एक आदमी जो कहीं हाथ-पैर समेटकर बैठा हुआ है, काम नहीं करना चाहता, दूसरे की सम्पत्ति को लूटकर बैठ रहना चाहता है, दूसरों द्वारा किए गए श्रम पर राज्य करना चाहता है, ऐसा व्यक्ति चौबीसों घण्टे तैयार मिलेगा। राजनीति के इस उपद्रव से बचने का एक ही उपाय है कि हम लोग न्यायनीति को अपने सामाजिक जीवन का आदर्श मानें, न्यायधर्म को अपना धर्म मानें। समाज में हिन्दू, मुस्लिम, सिख, ईसाई आदि धर्मों को मानने से कल्याण नहीं होगा। हम ये नहीं कहते कि आप नमाज पढ़ना बन्द कर दें या मन्दिर में घण्टा बजाना छोड़ दें, बल्कि हम तो जीवनव्यवस्था की बात करते हैं। नमाज खूब पढ़ो, मन्दिर में घण्टा खूब बजाओ। शंकर जी की उपासना करो या विष्णु जी की या ब्रह्मा जी की, इससे कोई फर्क पड़ने वाला नहीं है। ये सब आपकी आधिदैविक अभिरुचि अथवा आपकी निजी आध्यात्मिक यात्रा है। इससे धर्म का कोई लेना-देना नहीं है। ये सब अध्यात्म है, धर्म नहीं। अध्यात्म को ही धर्म के शब्द में लपेटकर सारे साधु-महात्मा, जो राजनीतिज्ञों से मिले हुए थे, उन्होंने लपेट-लपेटकर सब घुट्टी पिलाई। इन्कम टैक्स की छूट के लालच में ऐसी कुत्सित साधुता को धारा 80-जी का फायदा उठाना था। सारा चन्दा बटोरकर ये साधु-महात्मा का वेश बनाए बैठे हैं और ये महात्मा लोग यह भी कहते रहेंगे कि वे ब्रह्म हो गए हैं। ब्रह्म माने होता है- बृहदाकार, सर्वव्यापी। अपने को सबमें और सबको अपने में देखने और अनुभव करने वाला। किन्तु स्वयं को ब्रह्म कहने वाला वह महात्मा शान्ति से बैठा हुआ है और दूसरे आदमी इतने बर्बाद हैं फिर भी वह उनमें अपने को नहीं देख पा रहा है, वे पीड़ित हैं। उनका भी तो कुछ अधिकार बनता है। ये महात्मा अरबों-खरबों में खेलने वाले राजनीतिज्ञों से मिलकर जनता को लूट रहे हैं। हर संगठन राजनीतिज्ञों को बुलाकर उनका स्वागत करता है, ताकि उनकी दयादृष्टि बनी रहे और कोई कानून उन पर हाथ न डाले। इस लीला को आप कब तक चलाओगे। तुम्हारा साधु भ्रष्ट है, महात्मा भ्रष्ट है, नेता भ्रष्ट है। तुम्हारी सारी व्यवस्था भ्रष्ट है और न जाने भ्रष्टाचार में तुम विश्व में कौन से उच्च नम्बर पर आ गए हो। भ्रष्टाचार इसलिए हो रहा है कि जो आदमी धन का आकांक्षी है, उसे व्यापार, उद्योग, व्यवसाय आदि वाणिज्यकर्म करने चाहिए, किन्तु उसको आगे उच्चपदों पर बैठाए हैं। कहीं प्रशासनिक पदों पर उसे कलेक्टर बनाए हुए हैं, कहीं नेता चुने हुए हैं। अतः जो भी सार्वजनिक धन है, वह उसे अपने घरेलू हित में व्यय करता है। राजनेता बना दिया, तो सारा वित्त वह अपने घर की तरफ लगा रहा है। उसे व्यापार करने देते तो आराम से करोड़ों रुपये रखता। न्याय यही कहता है कि वणिक को करोड़ों रुपये रखने का अधिकार है। न्याय यह नहीं कहता कि जिसके पास करोड़ों रुपये हैं, उसे छीनकर गरीबों में बाँट दो। यह न्याय नहीं है। बल्कि न्याय तो यह कहता है संसाधन दो, धन नहीं। धन का उपार्जन तो परिश्रम से होता है किन्तु परिश्रम के लिए संसाधन चाहिए। संसाधन चार प्रकार के होते हैं- 1.कृषिभूमि, 2.वाणिज्यिकपूँजी, 3.सरकारीसेवा, 4.नेतृत्वपद। क्योंकि समाज में चार ही प्रकार के कर्म होते हैं- कृषिकर्म,

वाणिज्यकर्म, प्रशासनकर्म, नेतृत्वकर्म। इन कर्मों को करने से कुछ उपार्जन होता है। उस उपार्जन को पाने का हक है। एक व्यक्ति जो कि शारीरिक दशा में है, उसे कृषिकर्म करने का अधिकार है। जो मानसिक दशा वाला व्यक्ति है, वह वाणिज्यकर्म कर सकता है। किन्तु वह प्रशासनिककर्म या सार्वजनिक सेवा नहीं कर पाएगा। सार्वजनिक सेवा के लिए भावनात्मक बल चाहिए। इसीप्रकार जिसका आत्मिक केन्द्र विकसित हो गया हो, केवल वही नेतृत्व कर सकता है, क्योंकि वह समदर्शी हो जाता है। एक ही आत्मा को सबमें समानरूप से व्याप्त देखकर वह समस्त उपद्रवों से बाहर हो जाता है, वह निष्पक्ष हो जाता है, वह न्यायकारी हो जाता है, वह ज्ञानचक्षुसम्पन्न हो जाता है। ज्ञानवान व्यक्ति ही नेतृत्व कर सकता है। यदि समदर्शी ज्ञाननेत्र नहीं खुले हैं, तो नेत्रहीन धृतराष्ट्र द्वारा किया गया नेतृत्व दुर्योधन को ही राजा बनाने की चेष्टा करेगा। वही हो भी रहा है कि ज्ञाननेत्रविहीन धृतराष्ट्रों द्वारा ही राष्ट्र का नेतृत्व हो रहा है। समदर्शिता, समनयन किसी भी राजनेता के पास नहीं हैं। नयन के बिना न्याय नहीं होगा। नयन कहते हैं– तीसरे नेत्र को। ज्ञानचक्षु ही तीसरा नेत्र है। जिसका तीसरा नेत्र क्रियाशील हो, काम करता हो, वही सबको समान देखता है। ज्ञान अथवा ध्यान की अवस्था में आपको तीसरे नेत्र का अनुभव होता है। यह तीसरा नेत्र ही न्यायकारी नयन है। जब तक किसी व्यक्ति में ज्ञाननेत्ररूपी नयन विकसित न हो जाए, वह नेतृत्व नहीं कर सकता, क्योंकि वह समदर्शी नहीं होता। सबके साथ न्याय करने को वह निष्पक्ष नहीं हो पाता। पक्षपाती होने के कारण वह अपने लड़के को ही राजा बनाना चाहता है। बापू आशाराम अपने लड़के को ही गुरु बना देंगे, सतपाल जी महाराज अपने लड़के को ही गुरुपद प्रदान कर देंगे, नेहरू जी अपनी बेटी इन्दिरा को ही प्रधानमन्त्री बनाना चाहेंगे फिर राजीवगाँधी फिर सोनियागाँधी फिर राहुलगाँधी शृंखला चल पड़ेगी। यह अन्धे धृतराष्ट्र की प्रक्रिया निरन्तर जारी रहेगी। कृष्ण भगवान चाहे जितना भी कहें कि युधिष्ठिर योग्य है, इसे बैठने दो राजगद्दी पर। लेकिन नहीं राजीवगाँधी ही सबसे ज्यादा योग्य है। क्यों? क्योंकि वही वंशवाद! पीढ़ी–दर–पीढ़ी वही उपद्रव! जो राजतन्त्र अनादिकाल से चला आ रहा है! पहले बाबर, फिर उसका बेटा हुमायूँ, फिर उसका बेटा अकबर, फिर उसका बेटा जहाँगीर, फिर उसका बेटा शाहजहाँ, फिर उसका बेटा औरंगजेब आदि क्रमशः राजा बनते जाएँगे। योग्यता की कोई पूछ नहीं! सारे नेताओं का अगर आई.ए.एस. स्तर का भी टेस्ट ले लिया जाए, तो सभी फेल हो जाएँगे! कलेक्टर भी बनने की स्थिति में नहीं हैं, फिर भी अपने अण्डर में कलेक्टर को चला रहे हैं! आप सब चाहते क्या हो? कहाँ ले जाओगे इस राष्ट्र को? धरती को धकेलकर क्या ध्वस्त करने का इरादा है? हम इसे ध्वस्त नहीं होने देंगे! अगर आप पाँच सालों में सामाजिक न्याय नहीं करते हैं, तो 2011 से हम किसी भी सूरत में इसे करेंगे– प्राकृतिक न्याय की आध्यात्मिक प्रक्रिया द्वारा। फिर वे दिन शायद ज्यादा कष्टकारी होंगे। हाँ, वे दिन अधिक कष्टप्रद भी हो सकते हैं। जैसा हम घोषणापत्र में कह रहे हैं, वैसा कर लो! अन्यथा 2011 से इसे हम आध्यात्मिक सामर्थ्य के द्वारा करेंगे। हम शान्ति के पुजारी हैं, कोई क्रान्तिकारी नहीं। हम तो खुद एक कमरे से बाहर निकलना पसंद नहीं करते। एक ही जगह सात सालों से बैठे हुए हैं। आस–पड़ोस के व्यक्ति भी हमें ठीक से नहीं जानते हैं। कभी–कभी यहाँ जो महीने में एक दिन हमसे मिलता है, केवल वही हमें जानता है। हमारे पास और कोई काम शेष नहीं। हम सभी कामों से फुर्सत हैं, मुक्त हैं। केवल एक ही कार्य है– धर्मस्थापना। भारतसहित सम्पूर्ण विश्व में सामाजिक न्याय को स्थापित करना और सनातन धर्म के वास्तविक स्वरूप को, वर्णाश्रमधर्म के सात्त्विक स्वरूप को पुनर्प्रतिष्ठित करना। 'एक संकल्प है एक ही भावना। धर्म स्थापना, धर्म स्थापना।।' भारत में न्यायधर्म की स्थापना का यह कार्य पाँच सालों में शान्तिपूर्वक हो जाना चाहिए।

आप सभी पत्रकार बन्धु हमारी बातों के पक्ष में 90% से भी अधिक जनमानस को सहमत पाएँगे। इसके बावजूद भी यदि भारतसरकार हमारी बातें लागू नहीं करती तो कहाँ है लोकतन्त्र? हम ऐसे लोकतन्त्र को कभी सहन नहीं करेंगे, जिसमें लोक की सुनी ही न जाती हो! जनतन्त्र में जनता की सुनी ही न जाए, तो उसे जनतन्त्र कैसे कहेंगे? आप मुझे किसी भी नेता के साथ खड़ा कर दें, जब भी मौका आए। मैं आप सभी पत्रकार बन्धुओं से कहता हूँ। उसे चुनाव लड़ना है, मुझे चुनाव नहीं लड़ना। मैं अपनी बात रखता हूँ, आप उस राजनेता से उसकी बात रखवा लेना। जनता में से 90% से अधिक का हाथ मैं अपने पक्ष में उठवाकर दिखा दूँगा, खुला मतदान करवाओ! पूरे भारत को एक ही जगह इकट्ठा कर दो, तो एक ही बार में 90% हाथ उठवा दूँगा कि ये सब मेरी बात से सहमत हैं अन्य किसी की नहीं। चाहे वह कम्यूनिस्ट पार्टी का हो, बी.जे.पी. का हो, काँग्रेस का हो, बी.एस.पी. का हो या अन्य किसी भी पार्टी का; इन सभी को मिलाकर एक ही पार्टी होती है, जिसे कहते हैं, राजनीति, राजतन्त्र, षड़यन्त्र। आप किसी भी राजनेता को ले आओ। पन्द्रह मिनट में हम उसी से कबूल करवा देंगे कि वह गलत रास्ते पर है। वी.पी.सिंह जब राजनीति से रिटायर हुए, तो उन्होंने कहा कि अब मैं कविता लिखूँगा, राजनीति नहीं करूँगा। राजनीति बहुत गलत है, दिनभर झूठ बोलना पड़ता है। किसी भी राजनेता से पूछ लो दिल पर हाथ रखकर बता देगा कि राजनीति गलत है। इसमें झूठ है, धोखा है, फरेब है। सभी इस बात को भलीभाँति जानते हैं। एक दो राजनीतिज्ञ यहाँ भी बैठे हैं। उनसे पूछ सकते हैं कि राजनीति में सभी कुछ भलाचंगा नहीं है। कोई तो कह दे कि वह अच्छी स्थिति में है! नहीं-नहीं! वह खुद इस बात से त्रस्त है। एक ग्रामप्रधान भी बना दो तो उसकी टाँगे खींचने वाले चारों तरफ मिलेंगे। शान्तिपूर्वक ग्रामप्रधानी भी नहीं की जा सकती। राजनीति कहाँ पहुँच चुकी है? दलों के दल-दल में, गिरोहों के षड़यन्त्र में। इस कुत्सित राजनीति का अस्तित्व और कितनी दूर तक ले जाने के इच्छुक हैं आप लोग। क्या आप लोग इस बात से सहमत हैं कि पाँच सालों में यह न्यायधर्म स्थापित हो जाए। शिक्षा, रोजगार, सुखसुविधा, संरक्षण के चारों फण्डामेन्टल पब्लिक राइट्स लोगों को मिलें। राष्ट्रकोष का चार भागों में विभाजन हो और प्रत्येक विन्दु पर 25% धनव्यय किया जाए समुचित रूप से; 25% शिक्षा पर, 25% रोजगार पर, 25% सुखसुविधाओं पर, 25% संरक्षण पर। हाँ! 25% पहले शिक्षा पर ही व्यय करो, क्योंकि शिक्षा मानवजीवन की पहली आवश्यकता है। उसके पश्चात दूसरी सबसे बड़ी आवश्यकता रोजगार की है, जिस पर राष्ट्रकोष का 25% हिस्सा प्रतिवर्ष परिव्यय निर्धारित होना चाहिए। फिर प्रतिग्रामक्षेत्र आधार पर सुखसुविधाओं का वितरण करने के लिए 25% धनराशि का वार्षिक बजट सुनिश्चित होना चाहिए। किन्तु यह क्या कि तुमने दिल्ली की सड़कें बना डालीं सार्वजनिक धन से? कैसा धोखा कर रहे हो पब्लिक के साथ? लाखों गाँव आज भी ऐसे हो सकते हैं, जहाँ 57 सालों से सड़क नहीं बनी। आपको सार्वजनिक धन से किसी स्थानविशेष पर सड़क बनाने का अधिकार किसने दिया। एक ही शहर की सड़क 70 बार बना रहे हो। ठहर जाओ! पाँच किलोमीटर प्रतिग्राम आधार पर बनाओ। किसी निर्धारित जनसंख्या अथवा क्षेत्रसीमा को आधार मानकर प्रतिग्राम या प्रतिक्षेत्र स्तर पर सुखसुविधाओं का वितरण करो। इसीप्रकार 25% संरक्षण पर व्यय करो। जड़पदार्थ, वृक्ष-वनस्पति, पशु-पक्षी और मनुष्य सभी प्राणी संरक्षण प्राप्ति के अधिकारी हैं।

ये शिक्षा, रोजगार, सुखसुविधा, संरक्षण आदि के रूप में चार ही सार्वजनिक कार्य होते हैं। पाँचवाँ कोई सार्वजनिक कार्य नहीं होता। लेकिन आज सारा सार्वजनिक धन उसी पाँचवे सार्वजनिक कार्य पर ही व्यय होता है। पंजाबकेसरी के एक सम्पादकीय के अनुसार एक शिक्षक छात्रों से एक प्रश्न पूछता है- "यदि किसी राष्ट्र की सकल आय

65 हजार करोड़ हो और उसमें से 64 हजार करोड़ रुपये नेता उड़ा लें, तो वह राष्ट्र कितने दिनों में स्वावलम्बी हो जाएगा। कृपया पाठकगण उत्तर दें।" हमें बड़ा अजीब लगा कि पाठकगण उत्तर दें? पाठक बेचारे क्या कर सकते हैं? केवल दिल मसोस कर रह सकते हैं। क्योंकि इनके हाथ में कुछ नहीं है। मैं आप सभी से पूछता हूँ कि चारों जनाधिकार क्या जनता को मिलने चाहिए? :-

१. शिक्षा (Education)

क्या 25 वर्ष तक सभी को निःशुल्क, अनिवार्य और अबाधरूप से शिक्षा मिले? राष्ट्रकोष का 25% धन इस मद पर व्यय हो? अभी तो केवल 2% या 3% ही शिक्षा पर व्यय होता है। बड़ी मुश्किल में सरकार ने अभी कुछ थोड़ा बढ़ाया था किन्तु फिर से शिक्षाबजट घटा लिया है। (व्यक्ति के व्यक्तित्व का निर्माण शिक्षा के द्वारा ही संभव होता है। यदि राष्ट्र के प्रत्येक नागरिक के लिए समुचित शिक्षा की सुलभता पर ध्यान नहीं दिया गया, तो निश्चय ही जनता का व्यक्तित्व कुंठित हो जाएगा। कुंठित व्यक्तित्व सम्पूर्ण राष्ट्र को विनाश के गर्त में झोंक देता है। मन, बुद्धि, चित्त, अहंकार रूपी मानवीय अन्तःकरण चतुष्टय का परिष्कार करने के लिए भाषा, गणित, संज्ञान, दर्शन आदि चारों विषयों की सम्यक् शिक्षा प्रदान की जानी चाहिए। साथ ही कृषि, वाणिज्य, प्रशासन, नेतृत्व आदि कर्मों का कौशल प्रदान करने के लिए समुचित प्रशिक्षण की आवश्यकता होती है। कौशल के बिना कर्मसम्पादन सफलतापूर्वक नहीं किया जा सकता। अतः उपरोक्त शिक्षा-प्रशिक्षण मानवीय व्यक्तित्व के निर्माण हेतु परम आवश्यक है। व्यक्ति में गुणवत्ता, योग्यता, क्षमता, कौशल का विकास इस शिक्षा-प्रशिक्षण के द्वारा ही संभव होता है। इसीलिए राष्ट्रीय सरकार का यह प्राथमिक उत्तरदायित्व भी सिद्ध होता है कि वह जनता में से प्रत्येक व्यक्ति को यह शिक्षण-प्रशिक्षण समुचितरूप से प्रदान करे। यही राष्ट्रीय जनता का प्राथमिक जनाधिकार भी है।)

२. जीविका (Employment)

क्या राष्ट्रकोष का 25% धन राष्ट्र के नागरिकों के प्रत्येक परिवार के रोजगार हेतु व्यय किया जाए? किन्तु सरकार को रोजगार से अभी कोई मतलब नहीं है। रोजगार किसी राष्ट्र में कभी कम भी नहीं होता। रोजगार का संसाधन सदा उतना ही रहता है, जितना कभी होगा। अनादिकाल से चार ही रोजगार रहे हैं- कृषि, वाणिज्य, प्रशासन और नेतृत्व। इन चारों रोजगारों में से वरीयता, अर्हता, पात्रता के अनुरूप प्रति परिवार एक रोजगार दीजिए। यदि किसी परिवार के पास कोई भी एक रोजगार है, तो उसे दूसरा रोजगार पाने का अधिकार नहीं। यदि आपके पास कृषिभूमि है, तो आप न वाणिज्य कर सकते हैं, न सार्वजनिक सेवा के किसी सरकारी पद पर कार्य कर सकते हैं और न ही नेतृत्व कर सकते हैं। कृषि के अन्तर्गत खेती, उद्यान, पशुपालन आदि कर्म समाहित हैं। वाणिज्य के अन्तर्गत व्यापार, उद्योग और व्यवसाय समाहित हैं। कृषिकर्म के लिए 5 से 10 एकड़ भूमि यदि प्रतिपरिवार आधार पर प्रदान की जाए, तो बड़े आराम से परिवार चल जाएगा। लेकिन अभी ऐसा नहीं है। बड़ी चतुराई से जिसने कृषिभूमि पर कब्जा किया है, उसी ने व्यापार भी चला रखा है, होटल खोल रखा है। और उसी परिवार का सदस्य प्रशासनिक पद पर कलेक्टर भी बना बैठा है। फिर उसके बाद उसी परिवार का कोई सदस्य चुनाव लड़ने के लिए पर्चा लेकर खड़ा मिलेगा। भइया, एक दुकान ठीक से चलाना बहुत परिश्रम का काम है, मुश्किल है। इतने सारे काम आप एक साथ कैसे कर लेते हो? रोबोट हो गए हो क्या? बड़े आश्चर्यजनक हो गए हो। एक परिवार के लिए एक एम्पलॉयमेन्ट पर्याप्त है। परिवार की निर्धारित परिभाषा से अधिक संख्या होने पर आप

दूसरा रोजगार ले लीजिए। ये क्या बात हुई कि जिसके घर में पहले से ही अनेक रोजगार हैं, होटल चल रहे हैं, कारखाने चल रहे हैं, वही सरकारी पद पर बैठ रहा है। लाखों रुपया महीना व्यापार से कमाता है और सरकारी धन से भी पचासों हजार रुपये महीना और खींचता है। जबकि उससे ज्यादा योग्य व्यक्ति प्रशासन के उस पद पर नहीं जा सकता, क्योंकि उस बेचारे का कोई ताम-झाम नहीं है, सोर्स नहीं है, पहुँच नहीं है।

संसाधन उतने ही होते हैं। लेकिन कोई एक ही व्यक्ति या परिवार सभी संसाधनों पर कब्जा करके बैठ जाए, तो औरों के लिए अभाव उत्पन्न हो जाएगा। ऐसी स्थिति में राजनेता बाहर से आकर दावा करेगा कि वह नये पद क्रिएट करेगा और लोगों को रोजगार वितरित करेगा। किन्तु पूर्वकब्जेदारों को सभी पदों पर बैठाए रखेगा।

जब 1947 में आजादी हुई, तो सारे राजाओं के पास राजकोष के रूप में जनता का जो धन था, उन राजाओं ने उस पर कब्जा कर लिया। उस समय लगभग 365 रियासतें थीं और उन रियासतों के राजाओं ने उस सार्वजनिक धन पर कब्जा कर लिया। सारी सार्वजनिक सम्पत्ति, बिल्डिंग स्ट्रक्चर आदि को अपने अधीन कर लिया। अन्य भी सारी सम्पत्तियाँ उनके नाम पर रजिस्टर्ड कर दी गईं। चलो कोई बात नहीं, उनकी धनलिप्सा को देखते हुए उन्हें वैश्य अथवा वणिक बनाकर छोड़ दिया जाना चाहिए था। किन्तु नहीं वे सभी फिर काँग्रेस में भर्ती हो गए। बड़ी परेशानी हुई बेचारी जनता को। क्या आप लोग इन सभी बातों से परिचित नहीं थे? अब आप लोग सभी कुछ जानते हो, क्योंकि आप लोग पढ़-लिख गए हो। अब आप 50 साल पहले वाले हिन्दुस्तानी नहीं रहे हो। 50 साल पहले वाले हिन्दुस्तानी को तो कुछ समझ में ही नहीं आता था। लेकिन अब आप शिक्षित हो गए हैं, समझदार हो गए हैं, इसीलिए अब आप सभी न्यायशील जनाधिकारों को समझ पा रहे हैं।

३. सुविधा (Accommodation)

क्या सुविधाओं का वितरण राष्ट्र के सभी क्षेत्रों को किया जाना चाहिए और इन सुखसुविधाओं जैसे सड़क, पानी, बिजली आदि पर 25% राष्ट्रकोष का वार्षिक बजट परिव्ययित किया जाना चाहिए? इसके लिए 5 से 10 हजार आबादी का एक ग्राम मान लो और समुचित रूप से सभी क्षेत्रों को सुविधाएँ वितरित करो। गाँव और शहर के बीच विकासस्तर में इतना फासला क्यों है? ये गाँव और शहर क्या होता है? सम्पूर्ण राष्ट्र में प्रतिग्राम आधार पर सुविधाएँ दी जानी चाहिए। जो प्रतिग्राम आधार पर सम्भव नहीं, वह जिले स्तर पर हो, किन्तु यह क्या कि आपने सारा सार्वजनिक धन कुछ ही विशिष्टि स्थानों को दे दिया। जैसे आपने एक क्षेत्रविशेष को स्टेडियम दे दिया। किन्तु दूसरे क्षेत्र के व्यक्ति को उससे क्या लेना-देना? एक जगदलपुर के आदमी को दिल्ली के स्टेडियम से क्या लेना-देना? धोखा क्यों कर रहे हो? प्रतिग्राम आधार पर न्यायपूर्वक सुविधाएँ दो। लेकिन नहीं, कैसी जाहिलियत है आज। आम आदमी परेशानी उठा रहा है। घोर असुविधाओं में जी रहा है थोड़े से लगभग 10% व्यक्तियों ने 90% जनता के खून पीने का कार्यक्रम चला रखा है। इसको कहते हैं, राजनीति! कुछ राजा लोग और उनके समर्थक चाटुकार लोग बड़े आनन्द के साथ सार्वजनिक धन को लूट रहे हैं और खूब सुविधाएँ भोग रहे हैं।

सार्वजनिक धन से पेट्रोल पर सब्सिडी दी जाती है। क्या आप सभी यह बात नहीं जानते? क्या यह अन्याय नहीं है? सार्वजनिक धन से पेट्रोल पर सब्सिडी कैसे दी जा सकती है? जितने का पेट्रोल है, उस पर उतनी ही सब्सिडी दी जाती है। रसोई गैस पर भी सब्सिडी दी जा रही है, सार्वजनिक धन से। क्या गैस उपभोक्ता आम जनता है? नहीं! जब राष्ट्रकोष सार्वजनिक धन है, तो उससे सार्वजनिक कार्य ही किए जा सकते हैं,

किसी वर्गविशेष के लिए नहीं। एक पेट्रोलयूजर वर्ग, एक गैसयूजर वर्ग आदि कुछ लोग सार्वजनिक धन अपने गिलास में डालकर पी रहे हैं। क्या यह धोखा नहीं है? आप सब क्या इसको न्याय मानोगे? इसे न्याय नहीं कहा जा सकता। यह धोखाधड़ी है। आप सभी के साथ धोखा हो रहा है। आप जैसे दूसरे लोगों के साथ धोखा हो रहा है।

४. संरक्षण (Protection)

क्या सम्पूर्ण राष्ट्र के सभी संवर्गों को समुचित संरक्षण प्रदान किया जाना चाहिए? चिकित्सा, सुरक्षा, न्यायालय, बैंकिंग, बीमा आदि सार्वजनिक संरक्षण सेवाएँ जनता को न्यायपूर्वक वितरित की जानी चाहिए? इस संरक्षण पर 25% राष्ट्रकोष का वार्षिक बजट परिव्ययित किया जाना चाहिए?

एक आदमी जो ज्यादा चतुर हो गया है, उसको कहते हैं, अच्छा ठीक है ज्यादा बोल रहे हो, तुमको आरक्षण दे देंगे। आरक्षण से क्या होगा? आरक्षण नहीं सबको अधिकार दो। फण्डामेन्टल राइट जो एक प्रधानमन्त्री का है, वही एक आम नागरिक का भी होना चाहिए। जो जीवनाधिकार देश के राष्ट्रपति का है, वही देश के किसी भी नागरिक का होना चाहिए। आरक्षण किसको दिया जा रहा है? आरक्षण से क्या होगा? आरक्षण का लाभ भी वही उठा पा रहा है, जो कुछ चतुर है, सबल है। अतः आरक्षण नहीं, फण्डामेन्टल राइट्स दो। आरक्षण की चटनी क्यों चटवा रहे हो? आम आदमी का आरक्षण तो वोट लेने की नीतिमात्र है कि तुमको आरक्षण प्राप्त है और जिनको आरक्षण प्राप्त है, जाकर उनकी हालत गाँव में देखो! जैसी हालत आज से 1000 साल पहले थी, वैसी ही आज भी है। पिछले 57 सालों से आरक्षण प्राप्त करने पर भी आरक्षित आदमी जिसको कि आरक्षण मिलना था, उसकी स्थिति जैसी की तैसी बनी हुई है। ये क्या नाटक है? न्याय कहता है आरक्षण की क्या जरूरत है? हिन्दू है, कि मुस्लिम है, कि सिख है, कि ईसाई है, कि बाहरी है, कि आगन्तुक है, कि विदेशी है, कि आदिवासी है, कि अल्पसंख्यक है, कि बहुसंख्यक है, इससे क्या मतलब है? (सम्पूर्ण सृष्टि संरक्षणीय है। समष्टि के चारों संवर्गों को समुचित संरक्षण प्रदान करके ही राष्ट्रीय जीवन को संरक्षित बनाया जा सकता है। जड़पदार्थ, वृक्ष-वनस्पति, पशु-पक्षी, मनुष्य आदि चारों संवर्गों का जीवन संयुक्त है, अन्योन्याश्रित है। इसकी अन्तर्सम्बद्धता और पारस्परिक निर्भरता को ध्यान में रखते हुए राष्ट्रीय संरक्षण परिव्यय निर्धारित किया जाना चाहिए।)

न्यायपूर्वक जनता को चारों जनाधिकार प्रदान करो!

सबको 25 साल शिक्षा दो, शिक्षा की सारी फैसिलिटी दे दो, फेल भी मत करो। जितना नम्बर वह पाता है, 25% तक, 50% तक, 75% तक, 100% तक क्रमशः चार डिवीजन में बाँटो और उसे फेल भी मत करो। फेल करके भगा क्यों रहे हो स्कूल से? कल कोई नेता आएगा, कहेगा कि जो 80% तक नम्बर लाएगा, केवल वही आगे जाएगा, बाकी सब बाहर। इसका मतलब केवल 10% आदमी ही पढ़ा-लिखा होगा इस राष्ट्र में। यह धोखा है। आज जो IIIrd डिवीजन पास हुआ है, कल वह Ist डिवीजन भी ला सकता है। बीच में मेहनत करने लगता है, तो आज जो फेल हो गया है, कल वह Ist डिवीजन से पास हो सकता है। फेल करके बाहर करने की जरूरत क्या है? हर साल इसको अगली क्लास में जाने दो। एक ही क्लास में उसको 25 साल नहीं रगड़ो, हर साल उसको अगली क्लास में जाने दो, आगे बढ़ने दो। जिस दिन सही शिक्षानीति होगी सारी चीजें बनायी जा सकती है। और सारी चीजें हम बना रहे हैं।

अभी हम आपको सिर्फ दो न्यायाग्रह परिपत्र दे रहे हैं। कारण यह है कि दवा भी दो तो फूँक-फूँककर। कहीं ज्यादा न हो जाए, क्योंकि ज्यादा हो जाए तो दवा भी नुकसान करती है। इसीलिए हम आपको केवल दो न्यायाग्रह परिपत्र देंगे। थोड़े दिनों बाद फिर बुलाएँगे, फिर आपको दो न्यायाग्रह परिपत्र देंगे। फिर आपको कुछ दिनों बाद बुलाएँगे, फिर आपको दो न्यायाग्रह परिपत्र देंगे। इसीप्रकार लगभग दश न्यायाग्रह परिपत्रों द्वारा आपको सभी कुछ दे देंगे। और उन सारी बातों को इफेक्टिव करने के लिए 'जनमत संग्रह अभियान' का कार्यभार हम पत्रकारों को ही सौंपते हैं। वैसे हम खुद भी करवा देंगे। हमारा पत्रकार बन्धु इतना सशक्त है, मीडिया इतना सशक्त है कि एक ही दिन में बैठे-बिठाए अब तो कुछ भी कर सकता है। इलेक्ट्रॉनिक मीडिया तो और भी सशक्त है। जनमत संग्रह इण्टरनेट पर ही कर लेते हैं। आप पूरा पता करके देख सकते हैं कि हमारी इन बातों से लोग सहमत हैं; अथवा आपके प्रधानमन्त्री की बातों से, या राष्ट्रपति अथवा अन्य किसी जन्त्री-मन्त्री की बातों से। पता करके देख लें। हम तो दावा कर रहे हैं कि 90% से 95% व्यक्ति हमारी बातों से सहमत सिद्ध होगा। शेष 5% या 10% में हम उनको मानते हैं, जिनका मानसिक विकास नहीं हुआ है या जो विक्षिप्त हैं, पागल हो गए हैं अथवा उनमें नेचुरल फाल्ट है या कि आपराधिक कृत्यों में पैर से शिर तक डूबे हैं, कुछ होश ही नहीं है उन्हें। तो ऐसे व्यक्तियों को हम 5% या 10% में लेते हैं। बाकी का तो हम दावा करते हैं और कहें तो नमूने के तौर पर यहीं हाथ उठवाकर दिखा दें कि कितना आदमी हमारी बात से सहमत हैं। (सभा में उपस्थित सभी लोग एक साथ अपना हाथ ऊपर उठा देते हैं।) हम आपसे पूछते हैं कि क्या राष्ट्रकोष से 25% शिक्षा पर, 25% रोजगार पर, 25% सुविधाओं पर तथा 25% संरक्षण पर व्यय होना चाहिए अथवा नहीं? लोगों को प्रति व्यक्ति आधार पर शिक्षा क्यों नहीं मिलनी चाहिए? फिर जब वह 26वें वर्ष में प्रवेश करता है, तो पहले ही दिन उसे एम्पलॉयमेन्ट मिल जाना चाहिए उसको कहीं जाना न पड़े। वह अप्लीकेशन भी क्यों दे? जिस राष्ट्र में वह रह रहा है, उस राष्ट्र का जिम्मा है कि वह उसके घर पर एम्पलॉयमेन्ट पहुँचाए। शिक्षा पूरी होने पर पहले ही दिन एम्पलॉयमेन्ट का पत्र मिलना चाहिए कि आपको इस योग्यता के आधार पर अमुक जगह एम्पलॉयमेन्ट दिया जाता है, आप वहाँ जाकर अपना काम सँभालिए। वह धक्के खा रहा है। दो-दो लाख रुपये उससे लूट रहे हैं। बीच में दलाल खा रहे हैं। एक सज्जन आए और कहने लगे कि नौकरी दिलवाने के लिए एक आदमी ने 75 हजार रुपये ले लिए। चप्पल घिसवा डाली और पैसे भी नहीं लौटाए और न ही नौकरी मिली। ये क्या हो रहा है? रोज आदमी के साथ छल, प्रजा के साथ छल। इस तरह से एक-दूसरे को क्यों लुटवा रहे हो? मैं पूछता हूँ कि ये स्थिति बदलनी चाहिए या नहीं? वर्तमान स्थिति से क्या आप सन्तुष्ट हैं? कोई भी नहीं है! जो आज हाथ नहीं उठाएगा, वह भी अन्दर से सन्तुष्ट नहीं होगा, परेशान ही होगा। वह किसी न किसी कारण से उस दिन परेशान हो जाता है, जब कोई डकैत किसी दिन उसके बच्चे का अपहरण करके ले जाता है। उस दिन वह बड़ा परेशान दिखाई देता है। अभी कल ही एक सज्जन आए थे। उनके बड़े भाई का अपहरण हो गया। भाई की पैंट कहीं जंगल में मिली, तौलिया कहीं और, शॉल एक-दो किमी दूर मिला। वह सज्जन अभी भी पुलिस के चक्कर काट रहे हैं। वह भागे-भागे फिर रहे हैं। हमारे पास आये, बोले- गुरुजी क्या करें? कई नेताओं को ले जाकर पुलिस पर दबाव डलवाया, सबकुछ किया परन्तु कोई कार्यवाही करने को तैयार नहीं हुआ। उस दिन वह परेशान होता है। कहता है- नहीं है संरक्षण का फण्डामेन्टल राइट। उस दिन वह आदमी कहेगा आज मैं परेशान हूँ। आज अगर हाथ नहीं उठाएगा, तो कल हाथ उठाने के लिए समाज द्वारा बाध्य कर दिया जाएगा।

जब तक समाज में सामाजिकता नहीं होगी, सामाजिक न्याय नहीं होगा, लोगों के कर्तव्यों और अधिकारों का समुचित निर्धारण नहीं होगा, तब तक जी कर भी क्या करोगे? गुलामी में 2500 साल जिए। गाँधी जी से एक बार किसी पत्रकार बन्धु ने पूछा की आपको देश आजाद कराने में इतने साल क्यों लग गए, तो गाँधी जी ने कहा कि 40 साल तो यह बताने में लग गये कि तुम गुलाम हो। आप सोचो कि जिस राष्ट्र की जनता को यह भी नहीं पता कि वे गुलाम हैं, वे आजादी के लिए आवाज कैसे उठाते? वह कैसे हाथ उठा देगा कि वह आजादी चाहता है? जब गाँधी जी पूछते थे कि कितने लोग आजादी के समर्थक हैं तो पता चला कि भीड़ में से कोई 5% आदमियों ने हाथ उठाया। फिर उनको एक घण्टा स्पीच दिया, बोले- अच्छा फिर सुनो- तुमको अँग्रेजों ने मारा, तुम्हारी बहू-बेटी उठा ली, उसकी मार-मारकर खाल उधेड़ डाली। फिर बोले अच्छा हाथ उठाओ कितने लोग आजादी के समर्थन में हैं, तो पता चला 10% हाथ उठ गए, तो लगा कि कुछ गड़बड़ है। फिर एक घण्टा स्पीच दी, परिस्थितियों का पूरा खाका समझाया फिर बोले- हाथ उठाओ! तो इस बार 20% से 30% हाथ उठ गए। थोड़े और जागरूक हो गए लोग, क्योंकि 3 घण्टे समझाने में रेशियो बढ़ा। अब आप देखें आपको बड़ी विचित्र बात लगेगी कि आपको इतने धोखे में रखा जाता है, आपको इतनी गलत जानकारी दी जाती है, आपका इतना मानसिक शोषण किया जाता है, आपके साथ इतना मानसिक छल किया जाता है कि आप अपने आपको पहचानना ही भूल जाते हैं कि हम कौन हैं? कोई कहता है, हम हिन्दू हैं; कोई कहता है, हम मुसलमान हैं; कोई कहता है, हम ईसाई हैं; कोई सिख कहता है। कोई यह कहने को तैयार नहीं है कि पहले तो हम आदमी हैं और आदमी को भूख लगती है। आदमी को शिक्षा न मिले, तो वह मूर्ख रह जाता है। ये सब बातें आदमी को होती हैं, हिन्दू को नहीं। हिन्दू की ये सब आवश्यकताएँ नहीं हैं, मुस्लिम की भी नहीं, सिख की भी नहीं, ईसाई की भी नहीं। मुसलमान तो अल्लाह का एक बन्दा है, खुदा का नेक इंसान है। अब आप सोचें कि भला ऐसे नेक इंसानों को इन सब बातों की क्या आवश्यकता है?

इसलिए मैं आपसे कहता हूँ कि शिक्षा का अधिकार सरकारी रूप से जनाधिकार होना चाहिए या नहीं? आप जिस भी राष्ट्र में रहते हैं, आपको उससे शिक्षा पाने का अधिकार है। क्योंकि समाज की जब व्यवस्था बनाई गई तो इन्हीं समस्याओं का अध्ययन किया गया कि ऐसे बहुत से सार्वजनिक कार्य हैं, जिनको व्यक्तिगत तल पर नहीं किया जा सकता। शिक्षाप्राप्ति के लिए हर व्यक्ति अपना निजी स्कूल, प्रयोगशाला, पुस्तकालय नहीं खोल सकता। पारिवारिक तल पर भी इसकी व्यवस्था नहीं की जा सकती। अतः कुछ सार्वजनिक कार्य हैं, जैसे सड़क बनाना। सड़क हर आदमी नहीं बना सकता, उसको बनाना भी नहीं आता है। पानी की टंकी हर आदमी नहीं बना सकता। शिक्षा, रोजगार, सुविधा, संरक्षण आदि से सम्बन्धित बहुत से ऐसे ही सार्वजनिक कार्य होते हैं, जिनको करने वाली संस्था को सर्वकार या सरकार कहते हैं। इसलिए सरकार का गठन किया जाता है।

'सरकार' वास्तविक शब्द नहीं है। 'सरकार' वास्तव में 'सर्वकार' शब्द है। 'सर्वकार' का अर्थ होता है- सार्वजनिक कार्य करने वाली संस्था। 'सरकार' का अर्थ होता है- जो आपके सर पर सवार होकर आपसे कार्य कराए अर्थात् आप पर हुक्म चलाए, आपसे अपनी सेवा कराए, हाथ-पैर दबवाए। जबकि 'सर्वकार' संस्कृत का शब्द है। हिन्दी में भी 'सर्वकार' ही कहते हैं। 'सरकार' उर्दू का शब्द है। तो आप हर चीज को ध्यान से देखें कि सार्वजनिक कार्य को जो संस्था करती है, वही संस्था सर्वकार है।

शिक्षा सार्वजनिक कार्य है, रोजगार सार्वजनिक कार्य है, प्रत्येक प्रकार की सार्वजनिक सुविधाओं का वितरण सार्वजनिक कार्य है, संरक्षण सार्वजनिक कार्य है। चार

ही सार्वजनिक कार्य हैं। पाँचवाँ कोई सार्वजनिक कार्य नहीं होता। चार इसलिए क्योंकि 'अयं आत्मा चतुष्पात्'। आत्मचेतना चार आयामी है– जाग्रत, स्वप्न, सुषुप्ति, तुरीय। ये जीवन चार आयामी है– क्रिया, विचार, भाव, चेतना। चार इसके आयाम हैं– तन, मन, प्राण, आत्मा। इसके चार आयाम हैं– अकार, उकार, मकार, ॐकार। इसके चार आयाम हैं– भूः, भुवः, स्वः और महः। जब आप जानोगे, तो आपको बड़ा विचित्र लगेगा कि इतना विराट दर्शन है आप लोगों का। आपका ज्ञान-विज्ञान इतना व्यापक है और आपको भटका दिया गया। कुछ जानने ही नहीं दिया। अब समय आ गया है कि हम सब इस उपद्रव से बाहर निकलें और जीवन के यथार्थ को समझें कि हमारा जीवननिर्वाह, जीवननिर्माण, जीवनव्यवहार और जीवनकल्याण; ये चारों सिद्ध हों। इसी के लिए आर्थिक न्याय, सांस्कारिक न्याय, व्यावहारिक न्याय और आध्यात्मिक न्याय आदि चारों प्रकार के न्याय समाज में प्रतिष्ठित हों। इन्हीं की स्थापना के लिए ये चारों फण्डामेन्टल राइट्स दिए जाने चाहिए– शिक्षा का मौलिक अधिकार, रोजगार का मौलिक अधिकार, सुखसुविधाओं का मौलिक अधिकार, संरक्षण का मौलिक अधिकार। ये चारों अधिकार आपको मिलने ही चाहिए :–

१. प्रति व्यक्ति आधार पर शिक्षा प्राप्ति का अधिकार।
२. प्रति परिवार आधार पर रोजगार प्राप्ति का अधिकार।
३. प्रति ग्रामक्षेत्र आधार पर सुखसुविधाओं की प्राप्ति का अधिकार।
४. प्रति संवर्ग आधार पर संरक्षण प्राप्ति का अधिकार।

ये चारों जनाधिकार हैं, पब्लिक राइट्स हैं, क्योंकि आपके जीवन की जितनी भी आवश्यकताएँ हैं, उनकी आपूर्ति करने के लिए ही सारी सार्वजनिक व्यवस्था आयोजित की जाती है, जिसे आप सरकार के रूप में जानते हैं। इसलिए कहा गया कि आप सभी 'कर' लगाएँ, टैक्स नहीं। टैक्स का अर्थ होता है, 'किराया'। इसलिए किराए से चलने वाली गाड़ी को टैक्सी कहते हैं।

'कर' का अर्थ होता है– सहयोग। राष्ट्रव्यवस्था चलाने के लिए राष्ट्रकोष में किया जाने वाला या दिया जाने वाला सहयोग 'कर' कहलाता है। इसके विपरीत जब आप गुलाम होते हैं, तो आप टैक्स का भुगतान करते हैं, घर पर टैक्स, जमीन पर टैक्स, आय पर टैक्स आदि। अतः हम अपने ही देश में किराएदार की भाँति रहते हैं, मालिक कोई और रहता है। आपकी मिल्कियत छीन ली जाती है, आप केवल गुलाम की भाँति रहते हैं और टैक्स का भुगतान करके ही देश में रहते हैं। धर्म आपको स्वामित्व प्रदान करता है। धर्म आपको कृषिभूमि का मालिक बनाता है। सरकारी कुछ नहीं होता है। राष्ट्र की कृषिभूमि आपके लिए होती है। धर्म आपको धन पर स्वामित्व देता है। धर्म आपको हर चीज पर स्वामित्व देता है। धर्म है– न्याय। न्याय आपको स्वामी बनाता है, दास नहीं। सभी स्वामी हैं। अन्यायग्रस्तसमाज में तो नाम भी दास रख दिया जाता है– जैसे कबीरदास, रविदास, तुलसीदास, रामदास आदि सब दास-दास। ये क्या नाटक है? ये सारी परम्पराएँ बदलने की जरूरत है और यहाँ ये सारी परम्पराएँ बदली जा रही हैं। जो आदमी 'धर्म संस्थापक संघ' (डी.एस.एस.) से कनेक्टेड है, वह सारी बातें जानता है और उसकी सारी चीजें बदली जा रही हैं और जो इन सभी मिथ्या परम्पराओं को छोड़ने के लिए तैयार हैं, उनके साथ हम पूरी तरह से हैं। हम उनका सभी कुछ बदलने के लिए तैयार हैं। उन्हें कहीं गुलाम बनने की जरूरत नहीं, कहीं दास बनने की जरूरत नहीं। आज पहली तारीख को मैं नये राष्ट्र की घोषणा करता हूँ। यह राष्ट्र सामाजिक न्याय पर आधारित होगा। 1 जनवरी सन् 2006 को मैं इसके गठन की घोषणा करता हूँ। चाहे यह राष्ट्र पूरे भारत के रूप में हो, चाहे इसमें पाकिस्तान भी मिल जाए, चाहे बांग्लादेश

भी मिल जाए, नेपाल भी मिल जाए और ये सभी मिलेंगे। आप बेफिक्र रहिए, ये सभी मिलेंगे। समय आ गया है, 'वसुधैव कुटुम्बकम्' का। न कोई बांग्लादेश रहेगा, न कोई नेपाल, न कोई श्रीलंका, न कोई अफगानिस्तान, न कोई यूरोप, न कोई अमेरिका। आपका ये भारतराष्ट्र सभी को अपने में समाहित कर लेगा। ये सारा विश्वराष्ट्र भारत के नाम से जाना जाएगा। लम्बा समय नहीं है, जल्दी यह सब होगा। हम कोई भविष्यवक्ता नहीं हैं, हम वर्तमानकर्ता हैं। हम जो करते हैं, वही कहते हैं और जो कहते हैं, वही करते हैं और जो कह रहे हैं, वही करेंगे और वही कहते भी आ रहे हैं, वही करते भी आ रहे हैं। जो हमसे जुड़ा हुआ आदमी है, वह जानता है कि जो हमने कहा होगा, वही हमने किया होगा और जो कर रहे हैं, वही कहा होगा।

दूसरी बात, हमारी कथनी और करनी में फर्क नहीं है। आप देखेंगे कि सबने भविष्यवाणी की होगी या की है। किन्तु हम वर्तमानवाणी में विश्वास करते हैं और ये सभी कार्य हम आप सभी के हाथों से करवा देंगे थोड़े ही दिनों की बात है। अखण्ड भारत का नारा फिर से बुलन्द होगा। पूरा विश्व न्यायशील भारत बनने वाला है। एक ही विश्वसरकार होगी। एक ही मुद्रा होगी। एक ही मूलभाषा होगी। उपभाषाएँ कुछ ऐच्छिक हो सकती हैं। एक कॉमन भाषा होगी। बाकी भाषाएँ ऐच्छिक होंगी। एक ही राष्ट्रीयता होगी। एक ही संविधान होगा। ये सारी व्यवस्थाएँ बनने का समय आ गया है। आप न भी बनाओगे, तो भी यह व्यवस्था बन जाएगी। आप मना भी करें, आप न भी बनाएँ, तब भी यह व्यवस्था बन जाएगी। ज्ञान-विज्ञान इस कदर बढ़ चुका है कि आप चाहते हुए भी न नहीं कर सकते। आप अगर बिजली का ज्ञान नहीं भी प्राप्त करना चाहते तो बिजली आपको अपना ज्ञान करा देगी, आप चिन्ता न करें। आपको बिजली का ज्ञान प्राप्त करके ही जीना होगा, अन्यथा कहीं भी गलत हाथ लग गया तो आपका काम हो जाएगा। इसलिए जानकारी जरूरी है। ज्ञान प्राप्त करना आपकी मजबूरी हो जाती है, क्योंकि समाज इतना ऊपर उठ चुका होता है, सड़क इतनी तेज चलने लगी है कि आपकी सुस्ती और आपका तमोगुण आपको सड़क पर पटक देगा। भागो! जल्दी करो! युगधारा बह रही है। बड़ी तेजी से सतयुग के कदम बढ़ते चले आ रहे हैं। आपको धूर्तों ने बताया है कि अभी तो 4,32,000 साल है कलयुग का। नहीं-नहीं, सत्युग आ चुका है। ये फैल रहा है बड़ी तेजी से। धरती पर स्वर्ग होगा। सारी धरती पर न कोई गरीब होगा, न कोई भय होगा, न कोई बेरोजगार होगा, न कोई चोरी होगी, न कोई अपहरण होगा, न कोई आतंक होगा, न कोई परेशानी होगी। सारी समस्याएँ विदा होने का समय आ गया है। आप इन पाँच सालों में जितनी तेजी से करना चाहोगे, ये सब परिवर्तन उतनी तेजी से हो जाएगा। ये सारी व्यवस्था बदलती चली जाएगी। सब कुछ चेन्ज होता जाएगा। ये सारा फ्रॉड सिस्टम चेन्ज होगा। महान परिवर्तन की घड़ी आ चुकी है, इसको कोई रोक नहीं सकता। इसे सारे लोग भी मिलकर नहीं रोक सकते। सिर्फ न्याय की कमी थी, बाकी सब काम हो चुका है। बहुत से सिपाही हमसे पहले भी आए। कई विवेकानन्द, कई दयानन्द तथा कई और लोग। उन्होंने काफी काम किया है। सरंजाम जुटा दिया गया था और बाकी जो रह गया था उसे हम पूरा कर देंगे। जितना काम रह गया था वह अब रह न जाएगा उसे अब पूरा कर दिया जाएगा। अब इस गन्दगी का समापन समारोह है। अगर ये ठीक नहीं होगा, तो न यह धरती होगी और न धरतीवासी। इस धरती पर विनाश और विकास दोनों ही सम्भावित हैं। चुनाव आपके हाथ है, आप चाहे जिसे चुन लें। या तो आप धरती पर से विदा होने के लिए तैयार हो जाइये या पूरे विकास को स्वीकार कर लीजिए। क्योंकि, या तो आप बिजली का उपयोग करना सीख लीजिए या झटका खाने को तैयार रहिए। क्योंकि अब बिजली का विकास हो चुका है अब आप बच

नहीं सकते। या तो आप उसका ज्ञान-विज्ञान सीख लीजिए या झटका खाने को तैयार हो जाइये, क्योंकि अब बिजली का विकास हो चुका है, अब आप उसकी उपेक्षा करके बच नहीं सकते। आप ट्रेन में चढ़ने का ढंग सीख लीजिए। जल्दी चढ़ा कीजिए, नहीं तो ट्रेन के नीचे चले जाएँगे। समाज इतनी तेजी से गति कर रहा है कि अब सुस्ती से काम नहीं चलेगा। आपको सीखना ही पड़ेगा, आपको उस जिन्दगी को जीना ही पड़ेगा। आप बाध्य हो जाएँगे। इसलिए अभी ये भविष्यवाणी जैसी बातें लग रही हैं, लेकिन बड़े निकट भविष्य में आप अपने हाथों से इन सब बातों को अंजाम देंगे। आपके हाथ इन सब कार्यों को करते नजर आएँगे। समय की बात है। अब आप देखें, पहले ये सब बातें आप तक पहुँचती भी नहीं थी। अब आप सभी इन बातों की चर्चा करेंगे और चर्चा हो भी रही है। अब तक न्याय को धर्म नहीं माना जाता था अब सभी को लगने लगा है कि न्याय ही धर्म है। न्याय ही धारण करने योग्य है। धारण करने योग्य क्या है- न्यायनीति अथवा राजनीति? मैं आपसे पूछता हूँ और आप सभी न्यायनीति के पक्ष में हाथ खड़े कर रहे हैं। इस न्यायनीति का मतलब है कि सबके साथ समुचित व्यवहार हो। सबके समुचित अधिकार और कर्तव्य निर्धारित हों, इसे ही न्यायनीति कहते हैं। किन्तु अनुचित व्यवहार हो, अनुचित अधिकार और अनुचित कर्तव्य हों, सबके लिए यह कितनी बुरी बात है। एक भूखा है, दूसरा गंगाजी में रोटी फेंक रहा है, दूध डाल रहा है, गंगाजी में प्रसाद के नाम पर। 'दर्द की बारिस में सारा जग बहाया। क्या हुआ तुमने खुशी के गीता गाया।। लोग जब फिरते हो अधनंगे बदन। क्या हुआ गर पीर को चादर चढ़ाया।।' तो यह सब धन्धा बन्द होगा और न्यायनीति अपने आप सबको समुचित रोजगार देगी। सम+अज् अर्थात् समाज। मनुष्य ही सामाजिक प्राणी है, समता से ही समाज का जन्म होता है। समता से जन्म होता है जिसका, उसे समाज कहते हैं और जिसमें सामाजिकता है और सभी के अधिकार और कर्तव्य का समुचित निर्धारण है। किन्तु जहाँ ऐसा नहीं होता, उसे जंगलराज कहते हैं कि आपके बेटे को तो शिक्षा प्राप्त हो, दूसरे के बेटे को नहीं। एक परिवार के सभी सदस्यों के पास सभी प्रकार का रोजगार हो, परन्तु किसी दूसरे परिवार के एक भी सदस्य को किसी भी प्रकार का रोजगार न हो, ये स्थिति जंगलराज की सूचक है।

इसके विपरीत एक परिवार के पास रोजगार है, तो दूसरे परिवार के पास भी समुचित न्यायपूर्वक रोजगार होना चाहिए। और यदि समाज में ऐसा नहीं है, तो इसका मतलब है कि समाज में अन्याय है। ये अन्याय गलत है। अतः यदि समाज में किसी एक भी परिवार को बेरोजगारी झेलनी पड़े, तो बाकी लोगों को भी रोजगार छोड़ने के लिए तैयार हो जाना चाहिए। यदि वे न्यायशील हैं, तो उनको भी मना कर देना चाहिए कि हमें भी नहीं चाहिए ऐसा अन्यायी रोजगार। अगर एक को खाना नहीं मिलता तो किस रूप से अपने घर में रोटी खाएँ। जब समाज सभ्य हो जाता है, तो लोग कहते हैं कि 'गर तू भूखा रहे मुझसे भी न खाया जाए।।' ये हम कोई शेर पढ़ रहे थे। ये तो खैर प्रेम है। प्रेम का धर्म अभी समाज स्वीकार नहीं कर सकता। प्रेम कहता है- 'मेरा कुछ भी नहीं, जो कुछ है, सब तुम्हारा है।' न्याय कहता है-'जितना मेरा उतना तुम्हारा भी।' किन्तु राजनीति कहती है-'सब कुछ मेरा है, तुम्हारा कुछ भी नहीं है।' तुम सिर्फ दास हो, तुम सिर्फ गुलाम हो, तुम्हारी कोई जिन्दगी नहीं। राजनीति भी दान करती है कि धोती बाँट दो, भले ही सैंकड़ों मर जाएँ धोती पाने में। साड़ी बँट रही है। कहीं पर 100 का नोट बँट रहा है, कहीं पर मिठाई बँट रही है, कहीं पर मदिरा बँट रही है, कहीं पर पद बँट रहे हैं। ये क्या हो रहा है? राजनीति भीख देने को तो तैयार है, किन्तु साधन देने को तैयार नहीं। भीख देते हो तुम, भीख देने के लिए तैयार हो। यह नहीं सोचते कि संसाधन दें, कोई एम्पलॉयमेन्ट दें। वास्तव में जिसके पास रोजगार है, वह भीख में साड़ी लेने नहीं जाता। किन्तु

राजनीति संसाधन नहीं भीख देती है। इसीप्रकार राजनीति चलती है। नवाब दान करते थे और राजनेता भी दान करते फिर रहे हैं, राजा हरिश्चन्द्र बने घूम रहे हैं। राजा हरिश्चन्द्र को आखिर क्या अधिकार था कि वह सारा सार्वजनिक धन एक भिखारी को दान करे? राज्य ही दान कर दिया एक भिखारी को। आपको सार्वजनिक धन अपने तरीके से बर्बाद करने का अधिकार नहीं है, क्योंकि आप सार्वजनिक धन के व्यक्तिगत मालिक नहीं होते हैं। सार्वजनिक धन को सार्वजनिक हित के कार्य में ही लगाया जाना चाहिए और सरकार ऐसा करने के लिए ही जनता द्वारा अधिकृत होती है। ऐसा नहीं कि सार्वजनिक धन को लेकर आप अपने घर चले जाएँ। आपको यदि किसी संस्था का कोषाध्यक्ष बना दिया जाए तो आप क्या करेंगे? वह कोष संस्था के कार्य करने के लिए है या आपके घर ले जाने के लिए। आप सोचिए इस बात को। सरकार एक संस्था है इसमें प्रधानमन्त्री, वित्तमन्त्री नियुक्त किए जाते हैं ताकि निर्धारित सार्वजनिक कार्य करें और ऐसा करने के लिए उन्हें शपथ भी दिलायी जाती है। लेकिन राजनीति के वशीभूत वे ऐसा नहीं करते। 'हाउ टु रूल' एक पॉलिटिकल बुक है, इसे हर राजनेता पढ़ता है। 'हाउ टु रूल' का अर्थ है कि कैसे पब्लिक को धोखा दें? कैसे उन्हें लूटें? 'हाउ टु डिफीट द पीपुल'? 'हाउ टु डिसीव द पीपुल'? ये सब बातें धोखा हैं। अब इस नाटक का पटाक्षेप होना ही चाहिए। 'न्यायधर्मसभा' इसी कार्य को करने के लिए 25 दिसम्बर 2005 को गठित की गई है। इससे पूर्व सात साल तक लगातार उसका काम किया गया है, ताकि कोई हमारा विरोध करने लायक न बचे। सबके मुँह पर हमने पहले ही ताला मार दिया है। अब कोई हमसे बकवास नहीं करेगा। अभी हमने 'धर्मसिद्धान्त' नामक एक सद्ग्रन्थ लिखकर जारी किया था और उसमें सभी को तर्क-वितर्क करने के लिए चुनौती दी गई है। इसमें सारे धर्मों का खाका बता दिया है कि सभी ने एक ही सत्य की बात की है, तो बीच में यह धर्मों के नाम पर पाखण्ड कहाँ से आया। इतना उपद्रव कैसे हुआ और सभी बातों की प्रामाणिकता भी दी गई है। इसमें उन सभी को नंगा कर दिया गया है। इसलिए इसके विरोध में न तो शंकराचार्य बात करने की स्थिति में है, न कोई प्रोफेसर, न कोई डाक्टर, न कोई धर्माचार्य, न कोई पादरी, न कोई इमाम, न कोई लामा। सबको खुली चुनौती दी गई है। किन्तु कोई वीरपुरुष आज तक सामने नहीं आया। इसमें यह भी कहा गया है कि अगर तुम नहीं आए और सत्य, प्रेम, न्याय, पुण्य के धर्म को स्वीकार नहीं किया और न ही इन बातों का खण्डन करने के लिए सामने आए, तो तुम सब चोर ठहरोगे। तुम राष्ट्र के अपराधी भी ठहरोगे। यदि तुम इन बातों को गलत भी नहीं ठहरा पा रहे हो और न ही इन पर चल रहे हो, तो अपराधी सिद्ध हो जाते हो। व्यक्तिकल्याण का आधार है- सत्य। परिवारकल्याण का आधार है- प्रेम। समाजकल्याण का आधार है- न्याय। समष्टिकल्याण का आधार है- पुण्य। बस इतना ही चतुष्पात् सनातन धर्म है। सामाजिक धर्म तो केवल न्याय ही है। न्याय के बिना समाज का कल्याण संभव नहीं है।

समाज में न्याय के चारों आयाम (आर्थिक न्याय, सांस्कारिक न्याय, व्यावहारिक न्याय, आध्यात्मिक न्याय इत्यादि) स्थापित हों, और इसके लिए राष्ट्रीय व्यवस्था में जनता को चारों 'फण्डामेन्टल राइट्स' मिलें। अगर तुम इस न्यायधर्म को गलत नहीं ठहरा पा रहे हो और मुँह छिपा रहे हो तो इसका मतलब यह है कि तुम गलत आदमी हो, तुम अपराधी ठहरोगे। चाहे तुम शंकराचार्य हो, चाहे तुम पादरी हो, चाहे इमाम हो, चाहे धर्माचार्य। बाइबिल, कुरान जितने भी धर्मग्रन्थ पृथ्वी पर हैं, सबका परिमार्जन कर दिया गया है- 'धर्मसिद्धान्त' नामक ग्रन्थ में। अब कोई भी बोलने की स्थिति में नहीं रहा। इसमें स्पष्ट बताया गया है कि तुम्हारे महापुरुषों ने तुम्हें क्या निर्देश दिया और तुमने क्या लीला की? बाइबिल क्या चिल्लाई, जीसस ने क्या कहा और तुमने क्या किया?

कृष्ण ने क्या बोला और तुमने क्या किया? ऋषियों ने क्या कहा और तुमने क्या किया? मोहम्मद ने क्या कहा और तुमने क्या किया? राम ने क्या कहा और तुमने क्या किया?

रामराज बैठे त्रैलोका । हर्षित भए गए सब शोका ॥
बयरु न करु काहू सन कोई । रामप्रताप विषमता खोई ॥

वही मूल्य आपका प्रतिष्ठित हो। वही शिक्षा आप सभी को, वही रोजगार की व्यवस्था आप सभी को, वही सुखसुविधा आप सभी को, वही संरक्षण आप सभी को समान और उचित रूप से चाहिए। इसे न्याय कहते हैं। इसीलिए न्याय का प्रतीक तराजू होता है और सभी न्यायालयों में तराजू होता है। संतुलन ही तराजू है। एक का हित दूसरे के समान तुलित हो, यही संतुलन है। इसप्रकार अधिकारों और कर्तव्यों के निर्धारण में जनता के बीच संतुलन का होना ही न्याय है। मोहम्मद न्याय के लिए चिल्लाता रहा, सारी जिन्दगी। जीसस ने कहा– 'मैं तो आया हूँ न्याय के लिए।' बाइबिल उठाकर देखो, पढ़ो! उसमें बड़ी न्याय से परिपूर्ण बातें हैं। कृष्ण भी न्याय के लिए संघर्ष करते रहे। 'रामप्रताप विषमता खोई' सभी जानते हैं। राम अपने प्रताप से विषमता मिटाते रहे और जैसे ही विषमता मिटी तो एकता और अखण्डता का नारा देने की जरूरत नहीं पड़ी। एकता और भाईचारा स्वयं ही पैदा हो गया।

जब राम के प्रताप से विषमता मिटी तो–''सब बर करहिं परस्पर प्रीती। चलहिं सुधर्म निरत श्रुति नीती॥'' और राम से पहले भ्रष्टाचार था, दशरथ ने भ्रष्टाचार फैला रखा था, उन्होंने देश में विषमता (अन्याय) फैला रखा था, तभी तो राम ने विषमता को मिटाया। राम के गद्दी पर बैठने से पहले यदि विषमता नहीं थी तो राम ने विषमता को मिटाया कैसे? प्रश्न तो यह उठता है। अर्थात् वैषम्य था, अन्याय था, इसलिए राम ने उसे मिटाने की चेष्टा की और उन्होंने किया भी। विषमता के मिटते ही समता प्रतिष्ठित हो गयी और लोगों में प्रेम पैदा हो गया। लेकिन राम ने व्यवस्था नहीं दी थी और उनके विदा होते ही स्थिति वही हो गयी, जो राम से पूर्व थी। दूसरे लोग व्यवस्था नहीं कर पाए। क्योंकि राम ने न्याय का विधान या संविधान नहीं बनाया था। समता का संविधान प्रेसक्राइब्ड करके जैसा दिल्ली में रखा जाना चाहिए वैसा वो नहीं कर पाए। हमारे संविधान को संविधान नहीं कहा जा सकता, क्योंकि इसमें समता की बात नहीं है, समता के कानून नहीं हैं। लेकिन जिसकदर लोगों को बेवकूफ बनाया गया है कि विषंविधान को संविधान डिक्लेयर कर दिया है। संविधान की भी बेइज्जती हो रही है चारों तरफ; नगाड़े बज रहे हैं। संविधान जो कि सबसे पूज्य ग्रन्थ होता है, तुम्हारा भाग्यनिर्माता होता है, उसको गाली बकी जा रही है।

संविधान की सम्वैधानिकता को प्रतिष्ठित करो। संविधान में कोई अनर्गल चीजें न घुसेड़ो। उसमें समता के ही सभी नियम बनाओ। अब आप सभी लोग देखें कि जब तक समाज में सामाजिक न्याय नहीं होता तो ऐसी स्थिति में आपको पता भी नहीं चलता कि आप गलत दिशा में जा रहे हैं। हर तरफ चोरी, हिंसा, डकैती, दहेज, आतंक आदि–आदि अनेक समस्याएँ बढ़ रही हैं। आपका साधु चिल्ला रहा है– दहेजहत्या बन्द करो और दहेजहत्या बढ़ती जा रही है। इसका कारण केवल इतना ही है कि जो अधिकार पुरुष के हैं, वे नारी के नहीं हैं। असली बात से सभी कतरा रहे हैं। दहेजविरोधी आन्दोलन चल रहे हैं। अब जरा विदेशों से धक्का मारकर शिक्षा का विस्तार हुआ है, इसलिए इन्हें भी अब शिक्षा की व्यवस्था करनी पड़ रही है। कहीं सर्वशिक्षा अभियान, कहीं प्रौढ़शिक्षा अभियान। कितने चतुर हैं ये राजनेता? बचपन में शिक्षा नहीं देंगे। पिछले 57 साल से तुमने उसको बूढ़ा कर डाला, अनपढ़ रखा। जब वह पढ़ने की स्थिति में न

रह गया तो उसको उस समय में क, ख, ग का पाठ पढ़ाया जा रहा है। कहा जा रहा है कि सभी साक्षर हो गए हैं। अब इन अनगढ़ साक्षरों से तो बेचारे निरक्षर ही ठीक थे। एक जटिलता और पैदा कर दी मस्तिष्क में। बचपन का पढ़ा हुआ कुछ और होता है और बुढ़ापे का कुछ और। वृद्ध पढ़ता नहीं केवल फार्मेल्टी पूरी करता है। श्रद्धा का केन्द्र बचपन में खुला रहता है। बच्चे को कहीं खड़ा कर दो, खड़ा हो जाता है; जहाँ बैठाओ, बैठ जाता है। जैसे-जैसे उम्र बढ़ती जाती है, अज्ञानी व्यक्ति का अहंकार भी बढ़ता जाता है। पिता कहता है खड़े हो जाओ, तो गुर्राकर देखता है अहंकार के कारण। जीसस ने इसीलिए कहा है कि यदि तुम परमेश्वर के राज्य में प्रवेश करना चाहते हो, तो बच्चे बन जाओ। बड़ी अच्छी बात कही। ये बात सभी कहते रहे। सारे महापुरुष एक ही बात करते हैं- न्याय की। इंसाफ के लिए मोहम्मद की तलवार बजती रही।

हिन्दू चिल्ला रहा है कि मुसलमान गलत है और मुसलमान चिल्ला रहा है कि हिन्दू काफिर है। इसका क्या मतलब है- न तो हिन्दू काफिर है, न तो मुसलमान गलत है। कुछ आदमी हिन्दुओं में गलत हैं और कुछ आदमी मुसलमानों में भी गलत हैं। कुछ हिन्दू भी अच्छे हैं, कुछ मुसलमान भी अच्छे हैं। तो अच्छे-अच्छे का एक समाज बना लो और बुरे-बुरे को दूसरी तरफ कर दो। हम पृथ्वी पर एक रेखा खींच रहे हैं, पता कर लो कि जो लोग न्याय से सहमत हैं, उनका एक राष्ट्र होगा- भारत। और जो न्याय से सहमत नहीं हैं, उनको रेखा के उस पार कर दो उनका राष्ट्र होगा- आरत। क्योंकि आरत माने दुःखी, भारत माने सुखी। 'भा' कहते हैं- प्रकाश को, ज्ञान को, सत्य को। जो सत्य के अनुसार नियम होते हैं, उन्हें हम 'न्यायकारी' कहते हैं। सत्य यह है कि जगत में दूसरा कोई है ही नहीं। 'एकै तत्त्व रचा संसारा।' यही 'थ्योरी ऑफ रिलेटिविटी' भी कह रही है कि आप सभी आपस में एक-दूसरे से जुड़े हुए हैं। जब यह विज्ञान भी कह रहा है और वेद में अनादिकाल से यही बात प्रमाणित है-'एकोऽहं द्वितीयोनास्ति!', 'अहं ब्रह्मास्मि!' तो आप धोखा क्यों करते रहे? बड़ी बेशर्मी की बात है, तुमने लाज-शरम गवाँ दी। सत्य की हत्या कर डाली। 'धर्म एवं हतो हन्ति धर्मो रक्षति रक्षितः।' जो धर्म की हत्या करता है, उसकी हत्या हो जाती है। जो धर्म की रक्षा करता है, वह सुरक्षित रहता है। तुम विवेकानन्द को मार भी डालो तब भी वो मरते नहीं जीवित रह जाते हैं। तुम कबीर को मार डालो, कोई फर्क नहीं पड़ता। वे तो धर्म के रक्षक हैं, उन्हें कोई फर्क नहीं पड़ता। राम, कृष्ण, जीसस, मोहम्मद, नानक, कबीर, बुद्ध, महावीर विदा हो जाएँगे, तो भी उनका नाम रहेगा। लगभग 150 देश जीसस को मान रहे हैं, लगभग 150 देश मुहम्मद को मान रहे हैं। कई सारे देश राम या कृष्ण को मान रहे हैं। क्यों? आप देखें कितनी विचित्र बात है। सत्य के आइने में हर चीज को देखें तो आपको हर चीज प्रॉपर दिखेगी। तब आपका आचार सदाचार हो जाएगा। तब आपका व्यवहार सद्व्यवहार हो जाएगा। आप न्यायशील हो जाएँगे। कितनी सुखद बात है! आज इसी न्यायशील देश के गठन की हम घोषणा करते हैं। आप सभी को न्यायधर्मसभा का घोषणापत्र देंगे। उसमें संक्षेप में कुछ बातें दी जा रही हैं, लेकिन इसमें इतना पर्याप्त ज्ञान है कि आप समझ सकें। इसे हम आप सभी को देंगे। इसमें कुछ ही पेजेज हैं। आप लोग हमारी बात को आसानी से पढ़ सकते हैं।

इति शुभम् भूयात्

सामाजिक न्यायनीति

नीतिसार

अन्न वस्त्र आवास शुभ, संसाधन विस्तार।
समुचित आर्थिक न्याय हो, यही नीति का सार।।
नाम रूप गुण शुभ मिलें, सब शिक्षा संस्कार।
शुभ सांस्कारिक न्याय हो, यही नीति का सार।।
पद आदर सम्मान शुभ, सबको उचित प्रकार।
शुभ व्यावहारिक न्याय हो, यही नीति का सार।।
दिशा देश दर्शन दशा, सबको उचित प्रकार।
शुभ आध्यात्मिक न्याय हो, यही नीति का सार।।

❁❁❁

जनाधिकार

शिक्षा पाने का तुम्हें, जन्मसिद्ध अधिकार।
शाश्वत् वर्ष पचीस तक, शुभ शिक्षा-संस्कार।।
आजीविका तुम्हें मिले, निश्चित प्रति परिवार।
संसाधन की प्राप्ति का, जन्मसिद्ध अधिकार।।
सुखसुविधा तुमको मिले, सब समुचित प्रतिग्राम।
नहीं असुविधा हो कहीं, हो समाज सुखधाम।।
संरक्षण सबको मिले, जीने का अधिकार।
जीवन स्वस्थ स्वतन्त्र हो, रक्षित हो संसार।।

❁❁❁

न्याय के बिना स्वतन्त्रता अधूरी

उगा सूर्य कैसा कहो मुक्ति का ये,
उजाला करोड़ों घरों में न पहुँचा।
खुला पींजरा है मगर रक्त अब भी,
थके पंछियों के परों में न पहुँचा।।
मिले जा रहे धूल में रत्न अनगिन,
कदरदान अपनी कदर कर रहे हैं।
मिला बाँटने जो अमिय था सभी को,
प्रजा का गला घोट घर भर रहे हैं।।
प्रजातन्त्र की धार उतरी गगन से,
मगर नीर जन सागरों में न पहुँचा।
खुला पींजरा है मगर रक्त अब भी,
थके पंछियों के परों में न पहुँचा।।
बिंधा जा रहा कर्ज से रोम तक भी,
न थकते कभी भीख लेकर जगत से।
बिछाए चले जाल जाते विधर्मी,
मगर स्वप्नदर्शी नयन हैं न खुलते।।
बचा देश का धन लिया तस्करों से,
मगर मालिकों के करों में न पहुँचा।
खुला पींजरा है मगर रक्त अब भी,
थके पंछियों के परों में न पहुँचा।।

❀❀❀

इंसाफ की डगर

इन्साफ की डगर पे, बच्चों दिखाओ चलके।
ये देश है तुम्हारा, नेता तुम्हीं हो कल के।।
दुनिया के रंज सहना और कुछ न मुँह से कहना।
सच्चाइयों के बल पर आगे को बढ़ते रहना।।
रख दोगे एक दिन तुम संसार को बदल के।
इन्साफ की डगर पे, बच्चों दिखाओ चलके।।
अपने हों या पराये सबके लिए हो न्याय।
देखो कदम तुम्हारा हरगिज न डगमगाए।।
रस्ते बड़े कठिन हैं चलना सँभल-सँभल के।
इन्साफ की डगर पे, बच्चों दिखाओ चलके।।
इन्सानियत के सर पे इज्जत का ताज रखना।
तन मन की भेंट देकर भारत की लाज रखना।।
जीवन नया मिलेगा अन्तिम चिता में जल के।
इन्साफ की डगर पे, बच्चों दिखाओ चलके।।

❀❀❀